mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-1 अंक-15 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

मनेन्द्रगढ़

16 जुलाई 2025 बुधवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना और मनेन्द्रगढ़ से एक साथ प्रकाशित

करोड़ों की मालकिन...

@ पेज 7

पंजाब विधानसभा में कांग्रेस विधायक ने गाली दी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब विधानसभा के स्पेशल सेशन के आखिरी दिन गाली निकालने को लेकर जमकर हंगामा हुआ। आम आदमी पार्टी के लुधियाना से विधायक मनविंदर ग्यासपुरा ने जालंधर नॉर्थ से कांग्रेस विधायक बावा हैनरी उर्फ अवतार हैनरी जूनियर के परिवार पर नशा बेचने के आरोप लगाए। इससे बावा हैनरी गुस्से में आ गए और उन्होंने ग्यासपुरा के लिए अपशब्द कह दिया। इतना सुनते ही सदन में हंगामा मच गया।

उस वक्त डिप्टी स्पीकर जयकिशन रोड़ी सदन की कार्यवाही चला रहे थे। ख्रु ग्यासपुरा ने डिप्टी स्पीकर को कहा कि अगर किसी उच्च जाति के विधायक को यहां गाली दी जाती तो आपने एक्शन ले लेना था। मगर, मैं संविधान की ताकत से विधायक बनकर आया हूं। अगर आप मुझ जैसे दलितों के साथ इंसाफ नहीं कर सकते तो मैं चुप बैठ जाता हूं। इस पर डिप्टी स्पीकर ने कहा कि आपको गाली देने वाले पर कार्रवाई होगी। विधायक को नोटिस निकाला जाएगा। पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता प्रताप सिंह बाजवा ने डिप्टी स्पीकर से कहा- आप रिकॉर्डिंग चेक कर लें, किसने पहल की है।

मणिपुर में 86 हथियार और 974 गोला-बारूद जब्त

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में सेना और पुलिस ने मंगवार सुबह जॉइंट ऑपरेशन में 86 हथियार और 974 गोला-बारूद जब्त किए। ये ऑपरेशन इंफाल ईस्ट, इंफाल वेस्ट, थौबल, काकचिंग और विष्णुपुर में चलाया गया।

सुरक्षाबलों की राज्य में पिछले एक हफ्ते से सर्चिंग जारी है। इससे पहले 7 जुलाई से 14 जुलाई तक चलाए गए ऑपरेशन में 10 उग्रवादियों को पकड़ा गया था। ये सर्चिंग पांच जिलों में की गई थी।

इस दौरान सेना ने 35 हथियार, 11 इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस ग्रेनेड और गोला-बारूद भी बरामद किया। राज्य में हथियारों की बरामदगी का यह एक महीने में दूसरा बड़ा मामला है।

इससे पहले 15 जून को 328 हथियार और गोला-बारूद बरामद किए गए थे। इनमें सेल्फ लोडिंग राइफल्स और इंसास जैसी राइफलें शामिल थीं। 8 जुलाई= कांगपोकपी जिले के बिजांग और फोलजांग में 18 हथियार बरामद किए।

राजस्थान में भारी बारिश से 16 की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजस्थान में भारी बारिश के चलते बाढ़ के हालात हैं। प्रदेश में बरसात के कारण हुए अलग-अलग हादसों में 24 घंटे में 16 लोगों की मौत हो गई। सोमवार को कोटा में प्रदेश में सबसे ज्यादा 198द्धद्ध बारिश हुई। यहां कोटा बैराज के 12 गेट खोले गए हैं।

मध्य प्रदेश में मानसून जमकर बरस रहा है। नर्मदा खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। जबलपुर, रीवा समेत 10 जिलों में एक सप्ताह से लगातार बारिश जारी है। इन जिलों में बाढ़ जैसे हालात हैं। सोमवार को श्योपुर के कई इलाके और गांव पानी से घिरे रहे। मकान-दुकानों से लेकर अस्पताल तक में पानी भर गया।

यूपी के लखनऊ, कानपुर, बरेली समेत 15 शहरों में तेज बारिश के कारण जलभराव-बाढ़ के हालात हैं। प्रदेश के कई बांध ओवरफ्लो होने लगे हैं। सोमवार को ललितपुर के गोविंद सागर बांध के 17 गेट खोले गए। चित्रकूट में उद्घाटन से पहले 51 करोड़ से बने 4 पुलों की एप्रोच सड़कें बह गईं। हिमाचल प्रदेश में बीते 24 दिन में 105 लोगों की मौत बारिश से जुड़ी घटनाओं में हो चुकी हैं। राज्य की 200 से ज्यादा सड़कें अभी भी बंद हैं। मनाली-चंडीगढ़ हाईवे पिछले 3 दिन से रोजाना लैंडस्लाइड के चलते बंद हो रहा है।

मुख्यमंत्री 16 से 19 जुलाई तक स्पेन प्रवास पर रहेंगे

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 16 से 19 जुलाई 2025 तक स्पेन के आधिकारिक दौरे पर रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव प्रदेश में निवेश के माध्यम से औद्योगिक विकास और रोजगार सृजनकी दिशा में सतत् रूप से प्रयासरत् है। स्पेन प्रवास के दौरान वे मैड्रिड में आयोजित इन्वेस्ट इन मध्यप्रदेश बिजनेस फोरम को संबोधित करेंगे और उद्योग, पर्यटन, खेल, संस्कृति तथा फिल्म निर्माण से जुड़े विषयों पर उच्चस्तरीय बैठकों में भाग लेंगे। मुख्यमंत्री दुबई से रवाना होकर देर रात स्पेन की राजधानी मैड्रिड पहुंचेंगे।

स्पेन प्रवास के प्रथम दिन 16 जुलाई की शुरूआत मुख्यमंत्री डॉ. यादव से भारत के राजदूत श्री दिनेश के. पटनायक शिष्टाचार भेंट करेंगे। इसके बाद वे इन्वेस्ट इन मध्यप्रदेश बिजनेस फोरम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। इस सेशन में वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पर्यटन, औद्योगिक नीति एवं निवेश, आईटी और अधोसंरचना सेक्टर पर प्रेजेन्टेशन होगा।

बिजनेस फोरम की शुरुआत मध्यप्रदेश शासन के सचिव एवं मुख्यमंत्री के सचिव श्री इलैयाराजा टी. के स्वागत भाषण से होगी। स्पेन-इंडिया काउंसिल फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री जुआन इग्नासियो एंत्रेकानालेस भी फोरम को संबोधित करेंगे। नेचर बायोफूड्स के सीईओ श्री रोहन ग्रोवर द्वारा अनुभव साझा किये जाएंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव फोरम में उपस्थिति उद्योगपतियों को मध्यप्रदेश में विभिन्न सेक्टर्स में निवेश के अवसरों पर विस्तृत जानकारी देंगे। नेटवर्किंग लंच में मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्पेन के प्रमुख उद्योगपतियों एवं विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों से संवाद करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव खेल सेक्टर में विख्यात स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर डिज़ाइन एवं कंसल्टिंग फर्म 'पॉपुलस' के प्रजेंटेशन में भाग लेंगे। यह प्रजेंटेशन श्री जोर्ज बेटनकौर द्वारा दिया जाएगा।

अहमदाबाद हादसे के 4 हफ्ते पहले ब्रिटेन की चेतावनीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। बोइंग विमानों के रखरखाव को लेकर ब्रिटेन की सिविल एविएशन अथॉरिटी ने मंगलवार को नया खुलासा किया। सीएए ने बताया कि अहमदाबाद प्लेन क्रैश के चार हफ्ते पहले बोइंग विमानों के फ्यूल कंट्रोल स्विच को लेकर को लेकर अलर्ट जारी किया था। सीएए ने15 मई को एयरलाइनों को निर्देश दिए थे कि वे अमेरिका की फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन के निर्देशों का पालन करें। एफएए ने अपने निर्देश में बोइंग 737, 757, 767, 777 और 787 विमानों में फ्यूल शटऑफ वॉल्व एक्ट्यूएटर्स को संभावित खतरा बताया था। सीएए ने ब्रिटेन आने वाली सभी एयरलाइनों को आदेश भी दिया था कि वे इन वॉल्व्स की जांच करें, जरूरत हो तो बदलें या रिपेयर करें और रोजाना जांच को अनिवार्य रूप से करें। वहीं, प्राइमरी रिपोर्ट में सामने आया है कि प्लेन के फ्यूल स्विच बंद होने की वजह से अहमदाबाद हादसा हुआ था। दरअसल, 12 जून को अहमदाबाद से लंदन जा रही फ्लाइट एआई 171 टेकऑफ के कुछ ही देर बाद एक मेडिकल हॉस्टल की इमारत से टकरा गई थी। इसमें 270 लोगों की मौत हो गई थी।

बेंगलुरु में 2 लेक्चर्स पर छात्रा से गैंगरेप का आरोप

बेंगलुरु (एजेंसी)। बेंगलुरु में एक प्राइवेट कॉलेज के दो लेक्चर और उसके दोस्त को एक छात्रा के साथ गैंगरेप के मामले में मंगलवार को गिरफ्तार किया गया। बेंगलुरु पुलिस ने बताया कि पीड़ित की शिकायत के बाद फिजिक्स लेक्चरार नरेंद्र, बायोलॉजी लेक्चरार संदीप और उसके दोस्त अनूप के खिलाफ कार्रवाई की गई। पुलिस में दर्ज शिकायत के मुताबिक, नरेंद्र ने छात्रा को नोट्स देने के बहाने बेंगलुरु बुलाया और अपने दोस्त अनूप के घर ले जाकर दुष्कर्म किया।

गोल्डन टेंपल को फिर बम से उड़ाने की धमकी

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में गोल्डन टेंपल को लगातार दूसरे दिन बम से उड़ाने की धमकी मिली है। ये धमकी ई-मेल पर मिली है। आरोपी ने दावा किया है कि पाइपों में आरडीएक्स भर दिया गया है, जिससे गोल्डन टेंपल के अंदर धमाके किए जाएंगे। हालांकि, सुरक्षा कारणों से न तो मेल और ना ही उसमें लिखे गए शब्दों को सार्वजनिक किया गया है। जांच के लिए डॉग और बम स्क्वायड पहुंचा। वहीं, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और अमृतसर पुलिस भी अलर्ट हो गई है।

स्पेस स्टेशन में 18 दिन रहकर लौटे शुभांशु

कैलिफोर्निया (एजेंसी)। शुभांशु शुक्ला सहित चार एस्ट्रोनॉट स्पेस स्टेशन में 18 दिन रहने के बाद पृथ्वी पर लौट आए हैं। करीब 23 घंटे के सफर के बाद ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट की आज यानी 15 जुलाई को दोपहर 3 बजे कैलिफोर्निया के तट पर लैंडिंग हुई। इसे स्प्लैशडाउन कहते हैं। चारों एस्ट्रोनॉट एक दिन पहले यानी सोमवार की शाम 4=45 बजे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन से पृथ्वी के लिए रवाना हुए थे।

सभी एस्ट्रोनॉट 26 जून को भारतीय समयानुसार शाम 4=01 बजे ढ्ढस्स् पहुंचे थे। एक्सियम मिशन 4 के तहत 25 जून को दोपहर करीब 12 बजे ये रवाना हुए थे। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट से जुड़े ड्रैगन कैप्सूल में इन्होंने कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरी थी।

शुभांशु की वापसी पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा- मैं पूरे देश के साथ ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला का उनकी ऐतिहासिक अंतरिक्ष यात्रा से पृथ्वी पर वापसी के लिए स्वागत करता हूं। शुभांशु ने अपने समर्पण, साहस से अरबों सपनों को प्रेरित किया है। यह हमारे अपने मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन-गगनयान की दिशा में एक और मील का पत्थर है।

शुभांशु 17 अगस्त तक भारत लौट सकते हैं। अंतरिक्ष यात्रियों को लैंडिंग के बाद मेडिकल जांच और रिहैबिलिटेशन के लिए आमतौर पर सात दिन लगते हैं, ताकि वे पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में फिर से ढल सकें। इसके बाद ही शुभांशु भारत लौटेंगे।

राहुल गांधी का लखनऊ कोर्ट में सरेंडर

लखनऊ (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने मंगलवार दोपहर को लखनऊ कोर्ट में सरेंडर किया। इसके 5 मिनट बाद कोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी। एडिशनल चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट आलोक वर्मा ने 20-20 हजार के दो बॉन्ड पर राहुल को जमानत दी। राहुल के वकील ने जमानत याचिका डाली थी, जिसे कोर्ट ने मंजूर कर लिया। राहुल कोर्ट के अंदर करीब 30 मिनट तक रहे।

राहुल दिल्ली से लखनऊ एयरपोर्ट आने के बाद सीधे एमपी-एमएलए कोर्ट पहुंचे थे। भारतीय सेना पर की गई टिप्पणी को लेकर कोर्ट ने उन्हें पेश होने का आदेश दिया था। पिछली 5 सुनवाई के दौरान राहुल हाजिर नहीं हुए। इसके बाद कोर्ट ने उन्हें समन जारी किया था। जमानत मिलने के बाद राहुल कोर्ट से सीधे अमौसी एयरपोर्ट के लिए रवाना हो गए।

राहुल के वकील प्रांशु अग्रवाल ने कोर्ट से राहुल की पेशी पर छूट की मांग की थी। मगर कोर्ट ने राहुल को व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया था। कोर्ट गेट पर गाड़ियों का काफिला पहुंचते ही पुलिस ने राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी और आराधना मिश्रा की कार रुकवा दी।

शिंदे बोले- पार्टी की छवि खराब की तो कार्रवाई होगी

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में विधायक कैंटीन के कर्मचारी को थप्पड़ मारने की घटना पर डिप्टी सीएम और शिवसेना प्रमुख एकनाथ शिंदे ने अपनी पार्टी के नेताओं को सख्त हिदायत दी है। उन्होंने कहा कि विधायक जो भी करते हैं, उसकी जिम्मेदारी मुझ पर आती है। इस वजह से सभी को अपने बर्ताव पर नियंत्रण रखना चाहिए। शिंदे ने सोमवार को कहा कि नेता चाहे कितने भी बड़े पद पर हों, पहले खुद को पार्टी का कार्यकर्ता समझें। सफलता को सिर पर न चढ़ने दें। उन्होंने यह भी कहा कि अगर किसी ने फिर से पार्टी की छवि खराब की, तो उन्हें कार्रवाई के लिए मजबूर होना पड़ेगा।

शिवसेना के बुलढाणा से विधायक संजय गायकवाड़ ने 8 जुलाई को एक कैंटीन कर्मचारी को थप्पड़ मार दिया था। गायकवाड़ ने खुद इस घटना को स्वीकार किया और कहा कि उन्हें कोई पछतावा नहीं है। शिवसेना के दो मंत्रियों संजय शिरसाट और संजय राठौड़ पर भी भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं। शिरसाट के घर से नकदी से भरा बैग मिलने का वीडियो भी वायरल हुआ है। शिंदे ने नेताओं से कहा कि वे विवादों में न उलझें और जनता के बीच अच्छा संदेश दें, क्योंकि अगर जनता नाराज हुई तो पद बचाना मुश्किल होगा।

शिवसेना (शिंदे गुट) विधायक संजय गायकवाड़ ने 8 जुलाई को खाने की क्वालिटी सही नहीं मिलने पर मुंबई के आकाशवाणी विधायक गेस्ट हाउस के केंटीन स्टाफ के साथ मारपीट की थी। इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था।

भारत में 5 साल में 65 फ्लाइट्स के इंजन बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में पिछले पांच साल में 65 फ्लाइट्स में उड़ान के दौरान हवा में या टेकऑफ करते समय इंजन बंद (शटडाउन) हुए। इससे पता चलता है कि हर महीने कम से कम एक विमान का इंजन बंद हुआ। हालांकि, सभी मामलों में पायलट एक ही इंजन से विमान को नजदीकी एयरपोर्ट तक पहुंचाने में सफल रहे। टाइम्स ऑफ इंडिया को ये जानकारी डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन से सूचना के अधिकार के तहत मिली है। दरअसल, अहमदाबाद हादसे की शुरुआती जांच रिपोर्ट से पता चला था कि विमान के दोनों इंजन बंद होने की वजह से हादसा हुआ था।

वहीं, आरटीआई रिपोर्ट से यह भी पता चला कि 1 जनवरी, 2024 से 31 मई, 2025 के बीच 17 महीनों में 11 फ्लाइट्स से मेडे कॉल आईं। इनमें तकनीकी गड़बड़ी की सूचना देकर इमरजेंसी लैंडिंग की मांग की गई। इनमें से चार फ्लाइट्स ने हैदराबाद में लैंडिंग की।

आरटीआइ रिपोर्ट में 12 जून दुर्घटनाग्रस्त हुआ बोइंग ड्रीमलाइनर और 19 जून को इंडिगो की गुवाहाटी-चेन्नई फ्लाइट शामिल नहीं है। फ्यूल कम होने की वजह से इंडिगो फ्लाइट डायवर्ट कर दी गई थी।

जम्मू में मिनी बस खाई में गिरी, 5 की मौत

जम्मू (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में एक मिनी बस के खाई में गिर गई। हादसे में पांच लोगों की मौत हो गई जबकि 17 अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। हादसे की जगह से चार शव बरामद किए गए थे, जबकि गंभीर रूप से घायल एक व्यक्ति की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। जिले के चीफ मेडिकल ऑफिसर ने बताया कि मौतों का आंकड़ा और बढ़ सकता है। कई घायलों की हालत गंभीर है। हादसा मंगलवार को डोडा-बराथ रोड पर पोंडा इलाके हुआ। मिनी बस के सड़क से फिसलकर गहरी खाई में गिरने की खबर है। बस में 21 लोग सवार थे। रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के घानी मेंढर इलाके में 6 मई को एक पैसेंजर बस खाई में गिरने से दो लोगों

की मौत हो गई थी। वहीं, 45 लोग घायल हुए थे। सभी घायलों को इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। यहां प्राथमिक उपचार के बाद घायलों को जीएमसी राजौरी रेफर कर दिया गया।

स्पाइसजेट फ्लाइट में पैसेंजर्स की कॉकपिट में घुसने की कोशिश

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली से मुंबई जा रही स्पाइसजेट की फ्लाइट (स्त्र-9282) में सोमवार को दो पैसेंजर्स ने कॉकपिट में घुसने की कोशिश की। एयरलाइन कंपनी के अनुसार क्रू मेंबर्स, पायलट और दूसरे यात्रियों के समझाने के बाद भी दोनों सीट पर नहीं बैठे। फ्लाइट टेकऑफ के लिए रनवे पर आगे बढ़ रहा था तब यह घटना हुई। इसके बाद फ्लाइट को वापस पार्किंग बे पर लाया गया। दोनों पैसेंजर्स को सीआईएसएफ को सौंप दिया गया। हंगामे की वजह से दोपहर 12=30 बजे की फ्लाइट करीब 7 घंटे की देरी से रात 7=21 बजे उड़ी।

अमेरिका में एक भारतीय मूल के व्यक्ति पर फ्लाइट में दूसरे पैसेंजर के साथ मारपीट और गला दबाने का आरोप लगा है। विवाद उड़ान भरने के कुछ समय बाद हुआ।

गुजरात में पुल टूटा, 15 फीट नीचे गिरे 8 लोग

जूनागढ़ (एजेंसी)। गुजरात में मंगलवार सुबह जूनागढ़ जिले में मरम्मत के दौरान एक पुल का स्लैब ढह गया। पुल पर मौजूद 8 लोग 15 फीट नीचे गिर गए। हालांकि सभी को बचा लिया गया है। जूनागढ़ में यह हादसा मांगरोल तालुका के अजाज गांव में हुआ। यह पुल केशोद को माधवपुर से जोड़ने वाला एक मुख्य रास्ता है, जहां से रोजाना कई वाहन गुजरते हैं।आज सुबह पुल की

मरम्मत का काम चल रहा था। तभी अचानक पुल का स्लैब ढह गया और हिताची मशीन तेज आवाज के साथ नीचे गिर गई। पुल के स्लैब पर कुछ लोग भी खड़े थे, जो स्लैब गिरने पर सीधे नदी में गिर गए, लेकिन गनीमत रही कि किसी को गंभीर चोट नहीं आई। गुजरात में एक हफ्ते में पुल टूटने की दूसरी घटना सामने आई है। 9 जुलाई को वडोदरा का गंभीर ब्रिज टूट गया था,

ओडिशा सेक्शुअल हैरेसमेंट केस- छात्रा की मौत

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के बालासोर में फकीर मोहन ऑटोनॉमस कॉलेज में खुद को आग लगाने वाली 20 साल की स्टूडेंट ने सोमवार देर रात दम तोड़ दिया। छात्रा 95 फीसदी झुलस चुकी थी और पिछले 3 दिनों से भुवनेश्वर के एम्स में जिंदगी की जंग लड़ रही थी। इधर, यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन यूजीसी ने 4 सदस्यों की फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाई है। जो घटना के कारणों की जांच करेगी। साथ ही भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकने के उपाय बताएगी। छात्रा की मौत के बाद लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा- मोदी जी, ओडिशा हो या मणिपुर - देश की बेटियां जल रही हैं, दम तोड़ रही हैं। और आप? खामोश बने बैठे हैं। देश को आपकी चुप्पी नहीं, जवाब चाहिए। राहुल के इस बयान को केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने ओछी राजनीति करार दिया।

मध्यप्रदेश पुलिस का जन-जागरूकता अभियान नशे से दूरी - है जरूरी

भोपाल ,एजेंसी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की प्रेरणा से प्रदेश को नशामुक्त बनाने की दिशा में मध्यप्रदेश पुलिस ने एक वृहद जन-जागरूकता अभियान नशे से दूरी है जरूरीकी शुरुआत की है। यह अभियान 15 से 30 जुलाई 2025 तक पूरे राज्य में संचालित किया जाएगा। पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाणा के मार्गदर्शन में यह अभियान पुलिस मुख्यालय की नारकोटिक्स विंग द्वारा चलाया जा रहा है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (नारकोटिक्स)श्री के. पी. वेंकटेश्वर राव ने बताया कि इस अभियान का उद्देश्य किशोरों और युवाओं को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना, उन्हें इस लत से दूर रखना और जो लोग पहले से नशे की गिरफ्त में हैं, उन्हें उचित परामर्श और सहयोग प्रदान कर पुनर्वास की दिशा में मार्गदर्शन देना है।

इस जन-जागरूकता अभियान में विभिन्न शासकीय विभाग, गैर-सरकारी संगठन , धर्माचार्य, समाजसेवी, जनप्रतिनिधि, और ग्राम एवं नगर सुरक्षा समितियाँ सक्रिय रूप से भाग लेंगी। समाज के सभी वर्गों के सहयोग से समाज के हर वर्ग तक संदेश पहुँचाया जाएगा कि नशा केवल व्यक्ति ही नहीं, पूरे समाज को प्रभावित करता है इससे दूरी रखना नितांत आवश्यक है। यह अभियान स्कूलों, कॉलेजों, सार्वजनिक स्थलों और डिजिटल माध्यमों के ज़रिए जन-जागृति फैलाने का कार्य करेगा।

हमीदिया अस्पताल में एमआरसी-सीटी स्कैन का सफल ट्रायल

भोपाल ,एजेंसी। भोपाल के हमीदिया अस्पताल में नई सीटी स्कैन और एमआरआई मशीनों का सोमवार को ट्रायल किया गया है। इस मौके पर (गांधी मेडिकल कॉलेज) डीन डॉ. कविता एन सिंह, हमीदिया अस्पताल के अधीक्षक डॉ. सुनीत टंडन समेत अन्य अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे। प्रबंधन के अनुसार, इन मशीनों के पूरी तरह से शुरू होने के बाद मरीजों को मॉडर्न जांच सुविधाएं अस्पताल परिसर में ही मिलेंगी। हालांकि, मरीजों के लिए यह सुविधा कब से शुरू होगी, इसकी तारीख अभी तय नहीं हुई है। हमीदिया अस्पताल ने मरीजों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नए भवन ब्लॉक-1 में 6 करोड़ रुपए की सीटी स्कैन और 18 करोड़ रुपए की एमआरआई मशीनें स्थापित की हैं। इन्हें इमरजेंसी विभाग के ठीक पीछे लगाया गया है, ताकि गंभीर मरीजों की जाँच तुरंत की जा सके। हाल ही में शासन से मंजूरी मिलने के बाद इन मशीनों के संचालन के लिए टेक्नीशियनों की नियुक्ति भी हो गई है। यह पहल नेशनल मेडिकल काउंसिल के नए नियमों के तहत की गई है, जिसके अनुसार सभी मेडिकल कॉलेजों में आधुनिक जांच सुविधाएं अस्पताल के अपने संचालन में होनी चाहिए। इससे पहले, हमीदिया अस्पताल में ये जांचें आउटसोर्स एजेंसियों के माध्यम से की जा रही थीं। इन नई मशीनों के आने से हमीदिया अस्पताल की नैदानिक क्षमता बढ़ेगी और मरीजों को उच्च गुणवत्ता वाली जांच सेवाएं आसानी से उपलब्ध होंगी।

माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय में प्रशासनिक पुनर्गठन

भोपाल **,एजेंसी।** माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में कार्य दक्षता और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत करने के उद्देश्य से प्रशासनिक पुनर्गठन किया गया है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने 11 जुलाई 2025 को तीन विभागाध्यक्षों को नए प्रभार सौंपने का आदेश जारी किया। इन बदलावों को विश्वविद्यालय की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी और समन्वित बनाने की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना जा रहा है।

आदर्श चिकित्सालय बनेगा गोविंदपुरा सिविल अस्पताल

भोपाल ,एजेंसी। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा है कि भोपाल के हथाईखेड़ा क्षेत्र स्थित गोविंदपुरा शासकीय सिविल अस्पताल पांच लाख से अधिक आबादी के लिए आधुनिक और समर्पित स्वास्थ्य सेवा केंद्र के रूप में विकसित होगा। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने सोमवार को रोगी कल्याण समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए यह बात कही। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि अस्पताल का विस्तार कर इसे आदर्श चिकित्सालय के रूप में विकसित किया जाएगा जिससे आमजन को बेहतर इलाज और सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध हो सकें। उन्होंने निर्देश दिए कि महिला मरीजों की देखभाल को प्राथमिकता दी जाए और अस्पताल स्टाफ मरीजों के प्रति संवेदनशील व्यवहार रखे। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने बताया कि सीएसआर मद से अस्पताल में पंजीयन के लिये कंप्यूटर के अलावा स्टेशनरी, चादरें व अन्य आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। बायोमेडिकल वेस्ट के निस्तारण के लिये समर्पित यूनिट की स्थापना के साथ ही आभा आईडी जनरेशन के लिए कंप्यूटर और इंटरनेट की सुचारु व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाएगी।

बैठक में स्टाफ क्वार्टर निर्माण की योजना पर चर्चा हुई। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने मेडिकल स्टूडेंट्स को इंटर्नशिप से जोड़ने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि इससे अस्पताल को अतिरिक्त मानव संसाधन मिल सकेगा और विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव भी प्राप्त हो सकेगा।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने पुलिस हाउसिंग कॉर्पोरेशन से अग्निशमन प्रणाली के नवीनीकरण और नगर निगम से आवश्यक एनओसी जल्द प्राप्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि रात के समय अस्पताल परिसर की सुरक्षा के लिए पुलिस गश्त बढ़ाई जाए। अस्पताल में ऑपरेशन थिएटर, प्रसूति कक्ष और सभी वार्डों में पर्याप्त नर्सिंग स्टाफ की उपस्थिति सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए।

वर्तमान में 100 बिस्तरों वाले इस अस्पताल में 11 चिकित्सा अधिकारी, 20 नर्सिंग ऑफिसर, 3 लैब टेक्नीशियन, 2 एक्स-रे टेक्नीशियन, 3 फार्मासिस्ट और 20 आउटसोर्स कर्मचारी सेवाएँ दे रहे हैं। भविष्य में यहां अतिरिक्त स्टाफ, आधुनिक संसाधन और सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। बैठक में सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा, मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. संजय खरे, अधीक्षक डॉ. अब्दुल हफीज, पार्षद श्रीमती छाया ठाकुर, श्रीमती ममता विश्वकर्मा सहित अस्पताल प्रबंधन और जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

ऊर्जा मंत्री ने तोमर ने ग्वालियर विधानसभा में जनसम्पर्क कर सुनी समस्याएं

भोपाल ,एजेंसी। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने उप नगर ग्वालियर के विभिन्न वार्डो में जनसम्पर्क कर जनसमस्याएं सुनी तथा उनका त्वरित निराकरण करने के निर्देश सम्बन्धित अधिकारियों को दिए। ऊर्जा मंत्री के साथ जिला प्रशासन, नगर निगम प्रशासन तथा विद्युत वितरण कंपनी के अधिकारियों के अलावा स्थानीय पार्षद व अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने सोमवार की सुबह उप नगर ग्वालियर के वार्ड क्रमांक 16 पहुंचकर स्थानीय रहवासियों से उनकी समस्याओं की जानकारी ली। इस दौरान ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने नाली में गंदगी देख स्वयं सफाई भी की। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने मौजूद अधिकारियों को सड़क, पेयजल, सीवर तथा बिजली से सम्बंधित शिकायतों के त्वरित निराकरण के निर्देश दिये। उन्होंने स्थानीय नागरिकों से आव्हान किया कि अपनी दिनचर्या में से कुछ समय निकालकर ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण मुक्त और नशा मुक्त बनाने के अभियान के लिए समय दें।

स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए 16 से 31 जुलाई तक अतिरिक्त सीएलसी चरण

भोपाल ,एजेंसी। उच्च शिक्षा विभाग ने प्रदेश के शासकीय और अनुदान प्राप्त अशासकीय एवं निजी अशासकीय महाविद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2025-26 स्नातक कक्षाओं में प्रवेश के लिए यह अतिरिक्त सीएलसी चरण 16 से 31 जुलाई तक आयोजित किया जायेगा।

विद्यार्थियों के लिए 16 जुलाई से प्रतिदिन प्रवेश पोर्टल पर महाविद्यालय वार रिक्त सीटों का प्रदर्शन किया जायेगा। विद्यार्थी रिक्त सीटों पर सीधे महाविद्यालय में उपस्थित होकर प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे। विद्यार्थी 16 जुलाई से प्रतिदिन अपराह्न 3 बजे तक पंजीयन/विकल्प चयन कर सकेंगे। हेल्प सेंटर द्वारा सायं 4 बजे तक प्राप्त आवेदनों का सत्यापन किया जायेगा और सायं 5 बजे मेरिट लिस्ट जारी की जाएगी। मेरिट लिस्ट जारी होने के 24 घंटे के भीतर विद्यार्थियों को प्रवेश शुल्क जमा करना होगा। प्रवेश शुल्क जमा न किये जाने की स्थिति में प्रवेश मान्य नहीं होगा। विद्यार्थियों को निर्धारित अवधि में प्रवेश शुल्क जमा न करने की दशा में, पुनः रीचॉइस करनी होगी। अतिरिक्त सीएलसी चरण की यह प्रक्रिया 31 जुलाई तक ही होगी।

उच्च शिक्षा विभाग ने शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिये एनसीटीई पाठयक्रम (बी.एड., एम.एड., बी.पी.एड., एमपीएड, बीएड एमएड (एकीकृत तीन वर्षीय) एवं बी.एल.एड. तथा बी.एड. (अंशकालीन तीन वर्षीय) संचालित करने वाले शासकीय/अशासकीय महाविद्यालयों में प्रवेश के लिए भी अतिरिक्त चरण की समय सारणी जारी की है। विद्यार्थी 15 से 18 जुलाई तक ऑनलाइन पंजीयन/आवेदन कर सकेंगे। पंजीकृत आवेदनों के दस्तावेजों का सत्यापन 15 से 19 जुलाई तक होगा। मेरिट सूची का प्रकाशन 21 जुलाई को होगा।

विद्यार्थियों के लिए 23 जुलाई को सीट आवंटन किया जाएगा। आवंटित हेल्प सेंटर पर मूल दस्तावेजों, टीसी माइग्रेशन के साथ भौतिक सत्यापन के लिए विद्यार्थियों को उपस्थित होकर 23 से 25 जुलाई तक लिंक इनिशिएट कराना होगा। विद्यार्थियों को आवंटित महाविद्यालय में प्रवेश शुल्क का भुगतान 23 से 26 जुलाई तक करना होगा।

18 क्रेट अमानक ब्रांड की पानी की बोतलें जब्त

भोपाल ,एजेंसी। स्टेशन पर कुशीनगर एक्सप्रेस में कार्रवाई; न बिल मिले, न वैध अनुमति

भोपाल। भोपाल रेल मंडल के वाणिज्य विभाग ने कुशीनगर एक्सप्रेस (22538) से 18 क्रेट अनएप्रूव्ड ब्रांड की पानी की बोतलें जब्त की हैं। यह बोतलें रेलवे की स्वीकृत सूची में नहीं थीं और न ही विक्रेताओं के पास कोई वैध अनुमति या बिल उपलब्ध था। जानकारी के अनुसार, गुप्त सूचना मिली थी कि कुशीनगर एक्सप्रेस में अवैध रूप से घटिया गुणवत्ता का पानी बेचा जा रहा है। सूचना मिलते ही विभाग ने तत्काल एक संयुक्त टीम गठित की, जिसमें स्टेशन मास्टर (कॉमर्शियल) एके खरे, मंडल मुख्य टिकट निरीक्षक सुनील वर्गीस, मंडल वाणिज्य निरीक्षक विनोद वर्मा और कैटरिंग इंस्पेक्टर भोपाल मेघा नागदेव को शामिल किया गया।

जैसे ही ट्रेन भोपाल स्टेशन पर पहुंची, टीम ने योजना के तहत ट्रेन में चढ़कर जांच शुरू की। पैंट्री और वेंडिंग पॉइंट्स के आसपास तलाशी ली गई, जहां से बड़ी मात्रा में बिना अनुमति वाला पानी बरामद किया गया। कार्रवाई के बाद सभी बोतलों को जब्त कर नियमानुसार अगली प्रक्रिया के लिए भेजा गया।

यूजीसी ने महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय को श्रेणी-1 की स्वायाता दी

भोपाल ,एजेंसी। उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने प्रदेश के चित्रकूट स्थित महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय को, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा श्रेणीबद्ध स्वायत्तता अंतर्गत श्रेणी-1 की स्वायत्तता अर्जित करने की महत्वपूर्ण उपलब्धि मिलने पर उच्च शिक्षा विभाग एवं विश्वविद्यालय परिवार शुभकामनाएं एवं बधाई दी हैं।उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि यह उपलब्धि मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा उच्च शिक्षा की गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे सतत् एवं व्यापक प्रयासों का प्रमाण है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सतत् नवीन आयाम स्थापित हो रहे हैं। राज्य सरकार, विद्यार्थियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के परिप्रेक्ष्य में गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारमूलक उच्च शिक्षा प्रदान करने की दिशा में प्रतिबद्धता से कार्य कर रही है। उच्च शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं प्रगति के साथ शैक्षणिक एवं अकादमिक स्तर पर गुणवत्ता की उत्कृष्टता के लिए उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

मंत्री श्री परमार ने कहा कि यह कीर्तिमान राज्य सरकार की उच्च शिक्षा शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। अब विश्वविद्यालय, अपनी स्वायत्तता के अनुरूप शिक्षण-प्रशिक्षण, शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देते हुए विद्यार्थियों को गुणवतापूर्ण उच्च शिक्षा के माध्यम से सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकेगा। श्री परमार ने कहा कि श्रेणी-1 की स्वायत्तता मिलने से विश्वविद्यालय को अकादमिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय स्तर पर अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी जिससे पाठ्यक्रम, शोध, नवाचार एवं मूल्यपरक शिक्षा को और अधिक मजबूती मिलेगी।

स्मार्ट मीटर से बिल कम करना अपने हाथ में है

भोपाल ,एजेंसी। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी की पहल पर पूरे कंपनी कार्यक्षेत्र के 16 जिलों में घरेलू स्मार्ट मीटर लगाने का काम तीव्र गतिसे चल रहा है। गुना वृत्त में लगभग तीन माह पहले लगाए जा चुके स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं से बातचीत में अनेक सकारात्मक पहलू सामने आए है।

अधिकतर उपभोक्ताओं ने फायदा होने की बात कही है। गुना शहर के उपभोक्ता श्री विष्णु धाकड़ ने बताया कि उनके यहां दो महीने पहले स्मार्ट मीटर लगा था, शुरू में उन्हें डर था कि कहीं स्मार्ट मीटर से बिल तो अधिक नहीं आएगा लेकिन जैसे ही अगले महीने बिल आया तो देखा कि कहीं कोई ऐसी गड़बड़ी नहीं आई। इस महीने 80 रुपये बिल आया है, जिसे जमा भी कर दिया है।

इसी तरह एक और उपभोक्ता श्री देवीदयाल ने बताया कि उनके यहां उनकी सहमति से स्मार्ट मीटर लगाया गया है। उन्होंने बताया कि इस महीने उनका बिल कम ही आया है। मीटर से किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है, बल्कि अब तो एप के माध्मय से हम अपने घर के बिजली उपयोग को भी नियंत्रित करना सीख गए हैं, क्योंकि उपकरणों पर नियंत्रण करने से बिल में काफी कमी आई है।

इसी तरह गुना के ही उपभोक्ता श्री अक्षय कुमार ने बताया कि स्मार्ट मीटर से कहीं कोई गलत बिल नहीं आया, हमारा बिल 550 रुपये आया है। रीडिंग लेने में कोई गड़बड़ी नहीं है, बल्कि अब तो अपने आप दूरसंचार प्रणाली से रीडिंग हो रही है और निर्धारित तिथि को सही रीडिंग का बिल मोबाइल पर दिया जा रहा है। उन्होंने भी कहा कि अब तो बिल कम करना अपने हाथ में है।

स्मार्ट मीटर उपभोक्ताओं जिसमें सार्वजनिक जल कार्य, स्ट्रीट लाइट और एलटी औद्योगिक उपभोक्ता शामिल हैं, के लिए ऑफ पीक/ सौर समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक की अवधि के दौरान उपभोग की गई ऊर्जा के लिए ऊर्जा प्रभार की सामान्य दर पर 20 प्रतिशत की छूट प्रदान की जा रही है। यह छूट 10 किलोवाट तक स्वीकृत लोड / अनुबंध मांग वाले उपभोक्ताओं को मिल रही है।

अत्यंत दुर्लभ घड़ियाल के 30 बच्चे और 36 बटागुर कछुए किये जप्त

भोपाल ,एजेंसी। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव के निर्देश पर स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स मध्यप्रदेश द्वारा सूचना तंत्र विकसित कर क्षेत्रीय इकाई भोपाल, शिवपुरी के साथ संयुक्त रूप से कार्यवाही करते हुए सबलगढ़-मुरैना मार्ग पर घेराबंदी कर जौरा शहर थाने के पास 12 जुलाई को 3 व्यक्तियों से अत्यंत दुर्लभ प्रजाति के घड़ियाल के 30 बच्चे और 36 बटागुर कछुए जप्त करने में सफलता प्राप्त की है। विवरण में बताया गया कि फोर्स द्वारा वाहन रोककर तलाशी ली गयी, जिसमें सवार 3 व्यक्ति विजय पिता शाशिकांत गोंड निवासी थाटीपुर ग्वालियर, राजू आदिवासी पिता जगदीश निवासी मउरानीपुर जिला झांसी और रामवीर सिंह पिता शिव सिंह निवासी सूर्य बिहार कॉलोनी ग्वालियर के पास से अत्यंत दुर्लभ 30 घड़ियाल के बच्चे और 14 बटागुर कछुए की जप्ती की गयी। स्टेट टाइगर फोर्स द्वारा आरोपियों से पूछताछ के बाद आरोपी विजय गोंड के ग्वालियर स्थित निवास से 22 बटागुर कछुए जप्त किये गये। इन आरोपियों पर वन एक्ट के तहत कार्रवाई कर प्रकरण दर्ज किया है इसमें स्थानीय पुलिस एवं वन मण्डल मुरैना द्वारा भी सहयोग किया गया। इन तीनों आरोपियों को शिवपुरी न्यायालय में प्रस्तुत कर फारेस्ट रिमाण्ड पर लेकर पूछताछ की जायेगी। इन आरोपियों पर पूर्व में भी इस प्रकार के प्रकरण दर्ज हैं, जिस पर इन्हें सजा भी हो चुकी है। पूछताछ के दौरान बताया गया कि यह जलीय जीव कोलकाता के रास्ते बांग्लादेश भेजे जा रहे थे। प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य-जीव ने बताया किजलीय जीव ग्वालियर की चंबल नदी में मुख्यतः पाये जाते हैं, जो अत्यंत दुर्लभ प्रजाति के हैं। केन्द्र एवं प्रदेश सरकार द्वारा इन्हें बचाने के प्रयास किये जा रहे हैं। इन संकटप्रद प्रजातियों का जलीय पारिस्थितिकी में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। अन्य देशों के अलावा मुख्यतः पश्चिमी यूरोपीय देश में इनकी भारी डिमाण्ड होने के कारण इनकी तस्करी की जाती है।

कर्पूर गौरम स्वरूप में सजे बाबा बटेश्वर

भोपाल ,एजेंसी। सावन के प्रथम सोमवार पर पुराने शहर स्थित प्राचीन बड़वाले महादेव मंदिर में बाबा बटेश्वर के दिव्य स्वरूप के दर्शन करने सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। श्री बड़वाले महादेव मंदिर सेवा समिति द्वारा भगवान भोलेनाथ का कर्पूर गौरम स्वरूप में भव्य श्रृंगार किया गया, जिसमें बाबा का मुख केसर और कपूर से सजाया गया।

समिति के प्रभारी प्रकाश मालवीय ने बताया कि सुबह महारुद्राभिषेक के साथ पूजन की शुरुआत हुई, इसके बाद विशेष आरती और दर्शन का क्रम चला। शाम को बाबा बटेश्वर का सवा क्विंटल फूलों से अलौकिक श्रृंगार किया गया। मंदिर परिसर में संध्या बेला में भक्ति संगीत की गूंज रही और रात्रि 9 बजे महाआरती में सैकड़ों श्रद्धालु शामिल हुए।

श्रद्धालुओं का मानना है कि भगवान शिव का यह गौरवर्ण रूप अत्यंत दिव्य है। इसकी उपासना से मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती हैं और भोलेनाथ शीघ्र प्रसन्न होते हैं। मंदिर में दिनभर दर्शनार्थियों की भीड़ बनी रही और भक्तों ने कतारबद्ध होकर दर्शन किए।

ऑनलाइन गेमिंग एप से धोखाधड़ी करने वाले गिरोह पकड़ाया

पुलिस ने 7 आरोपियों को किया गिरफ्तार; महादेव एप कनेक्शन की खोज

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। पुलिस ने ऑनलाइन गेमिंग एप के माध्यम से धोखाधड़ी करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने इस मामले में 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनमें से 5 आरोपी इंदौर से हैं। मामला 12 जुलाई को प्रकाश में आया, जब दीपक राठौर ने पुलिस अधीक्षक मोतिउर रहमान से शिकायत की। शिकायत में बताया गया कि कोतमा के संस्कार जायसवाल और घनश्याम बसोर ने गेमिंग एप में पैसा लगाकर दोगुना-तिगुना करने का लालच देकर 5 हजार रुपए की धोखाधड़ी की। जांच में पता चला कि यह गिरोह इंदौर से संचालित हो रहा था। इंदौर के प्लेटिन पैराडाइज कॉलोनी से भिलाई निवासी मोहम्मद कैफ और मोहम्मद रिजवान गेमिंग एप का इस्तेमाल कर रहे थे।

गिरफ्तार आरोपी और उनसे जब्त किया सामान: पुलिस ने इंदौर से प्रवीण पंडित, सानित मानिकपुरी, सारिक अली, रोहित जोशी और आकाश कटारे को गिरफ्तार किया। आरोपियों से 3 टैबलेट, 13 एंड्रॉयड मोबाइल, 20 सिम कार्ड, 40 पासबुक, 55 एटीएम कार्ड और 25 हजार रुपए नकद जब्त किए गए हैं। पुलिस ने आरोपियों के बैंक खाते भी सीज कर दिए हैं।

महादेव सट्टा एप हो सकता है कनेक्शन: पुलिस अधीक्षक मोतिउर रहमान ने बताया कि मुख्य आरोपी मोहम्मद कैफ और मोहम्मद रिजवान का संबंध महादेव सट्टा एप से भी हो सकता है। गिरफ्तार आरोपियों ने अनूपपुर जिले के अन्य साथियों के बारे में भी जानकारी दी है। पुलिस उनकी गिरफ्तारी के लिए टीमें भेज चुकी है। साथ ही गिरोह के बैंकों में खोले गए खातों की जांच भी की जा रही है। वहीं मुख्य आरोपी मोहम्मद कैफ और मोहम्मद रिजवान की भी तलाश की जा रही है, जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

सिंगरौली के माडा-सरई में नदी-नाले उफान पर

घरों में घुसा पानी; सामान बचाने की जद्दोजहद में लगे रहे लोग

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। जिले में लगातार बारिश से जनजीवन प्रभावित हो रहा है। माडा और सरई क्षेत्र में तेज बारिश के कारण नदी-नाले उफान पर हैं। सरई के गन्नई गांव की निचली बस्तियों में घरों में पानी घुस गया। लोग घर का सामान बचाने की जद्दोजहद में लगे रहे।

यहां के कई मकानों में पानी प्रवेश कर गया है। स्थानीय निवासी अपना सामान सुरक्षित स्थानों पर पहुंचा रहे हैं। दोपहर 12 बजे तक के मौसम विभाग के आंकड़ों के अनुसार माडा में सबसे अधिक 30 मिलीमीटर वर्षा हुई। सरई में 22.02 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। देवसर में 28 मिलीमीटर और चितरंगी में 4.4 मिलीमीटर बारिश हुई। सिंगरौली मुख्यालय में आज वर्षा नहीं हुई। जिले में दोपहर तक कुल 84.7 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। एक जून से 15 जून तक जिले में कुल 2116 मिलीमीटर बारिश हो चुकी है। यह मात्रा पिछले वर्ष की तुलना में दोगुनी से भी अधिक है।

चुरहट में बी.एल.ओ. एवं बी.एल.ओ. सुपरवाईजरों को दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी विधानसभा क्षेत्र 76-चुरहट ने जानकारी देकर बताया कि भारत निर्वाचन आयोग एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्यप्रदेश भोपाल द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के पालन में विधानसभा स्तरीय बी.एल.ओ. एवं बी.एल.ओ. सुपरवाईजरों को प्रशिक्षित किये जाने हेतु विधानसभा क्षेत्र 76-चुरहट अन्तर्गत शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चुरहट में 14 जुलाई से 16 जुलाई तक (कक्ष क्र. 1 एवं कक्ष क्र. 3) प्रशिक्षण आयोजित किया जा रहा है। निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी शैलेश द्विवेदी के निर्देशों पर नियुक्त मास्टर ट्रेनरों द्वारा उक्त प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

इस प्रशिक्षण में निर्वाचक नामावली के त्रुटि-रहित बनाने, भारत निर्वाचन आयोग के संवैधानिक प्रावधान, बी.एल.ओ. के दायित्वों, बीएजी की नियुक्ति एवं बूथ लेवल एजेंटों के साथ समन्वय स्थापित कर त्रुटि रहित मतदाता सूची बनाने, घर-घर सर्वे, एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) के संबंध में मास्टर ट्रेनर्स दयाशंकर द्विवेदी, कमलेश मिश्रा, प्रभाशंकर मिश्रा, शैलेन्द्र सिंह, सुखलाल सिंह एवं राकेश कुमार मिश्रा साथ ही दिल्ली से प्रशिक्षण प्राप्त कर आए हुए बूथ लेवल अधिकारी प्रमोद कुमार तिवारी द्वारा सभी बी.एल.ओ. एवं बी.एल.ओ. सुपरवाईजर द्वारा प्रशिक्षण प्रदाय किया जा रहा है।

कलेक्ट्रेट में जनसुनवाई, बीपीएल राशन कार्ड न मिलने की शिकायतें

सम्बल कार्ड के तहत सहायता राशि, वृद्धावस्था पेंशन की मांग

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। कलेक्ट्रेट के नर्मदा सभागार में मंगलवार को जिला स्तरीय जनसुनवाई हुई। इस दौरान कलेक्टर हर्षल पंचोली ने 64 आवेदनों की सुनवाई की। उन्होंने संबंधित विभागों के अधिकारियों को इन आवेदनों का निराकरण करने के निर्देश दिए।

सम्बल कार्ड के तहत सहायता राशि: जनसुनवाई में विभिन्न क्षेत्रों से लोगों ने अपनी समस्याएं रखीं। जैतहरी के खैरीटोला गांव से रामनारायण यादव ने वृद्धावस्था पेंशन की मांग की। कोतमा जनपद पंचायत के ग्राम कटकोना की संतोषी यादव ने सम्बल कार्ड के तहत सहायता राशि की मांग रखी।

समग्र आईडी में सुधार की उठी मांग: अनूपपुर के ग्राम दैखल से ललन प्रसाद केवट ने प्रधानमंत्री आवास योजना और उज्ज्वला योजना का लाभ मांगा। अनूपपुर के वार्ड नंबर 5 के नरेश कोल ने समग्र आईडी में सुधार की मांग की। ग्राम फुनगा के दीपचंद साहू ने बीपीएल राशन कार्ड बनवाने का आवेदन दिया। जनसुनवाई में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तन्मय वशिष्ठ शर्मा, अपर कलेक्टर दिलीप कुमार पाण्डेय मौजूद रहे। इसके अलावा जैतहरी की एसडीएम अंजली द्विवेदी, अनूपपुर के एसडीएम कमलेश पुरी, कोतमा के एसडीएम अजीत तिर्की और पुष्पराजगढ़ के एसडीएम सुधाकर सिंह बघेल भी उपस्थित थे।

सीधी के एनएच-39 पर फायरिंग, दो घायल

कार से उतरे बदमाशों ने फोटोशूट कर रहे युवकों पर चलाई गोली

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले में रविवार शाम को एनएच-39 पर एक फायरिंग की घटना सामने आई। चुरहट थाना क्षेत्र के ग्राम कठउतहा में फोटोशूट करा रहे आशुतोष पांडे और आशीष गौतम पर कार से आए बदमाशों ने हमला किया। घटना के समय आशुतोष पांडे और आशीष गौतम अपने दो अन्य साथियों के साथ फोटोशूट के लिए कैमरामैन को बुलाकर हाईवे किनारे खड़े थे। कार से उतरे पांच बदमाशों ने पहले आशीष गौतम के साथ मारपीट की। फिर फायरिंग कर दी। इस फायरिंग में गोली बाइक में लगी। हमले में दो लोग घायल हुए।

पुरानी रंजिश आई सामने: पुलिस जांच में सामने आया कि यह हमला पुरानी रंजिश का नतीजा था। कुछ दिन पहले ग्राम बदवार के एक ढाबे में आरोपी राहुल द्विवेदी का कुछ लोगों से विवाद हुआ था। राहुल को शक था कि ढाबे पर झगड़ा आशुतोष की वजह से हुआ। इसी रंजिश में उसने अपने साथियों के साथ हमला किया।

निजी वाहन से घायलों को भेजा अस्पताल: थाना प्रभारी चुरहट दीपक सिंह बघेल ने बताया है कि मारपीट की खबर राहगीरों के माध्यम से हमें मिली थी। इसके बाद प्राइवेट वाहन इलाज के लिए दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चुरहट में भर्ती करा दिया गया है। फायरिंग के आरोपियों की तलाश की जा रही है।

कार और हमलावारों की हुई पहचान: चुरहट के एसडीओपी आशुतोष द्विवेदी ने बताया कि आशुतोष पांडे अकबरपुर की एक फाइनेंस कंपनी में काम करता है। वह छुट्टी में अपने गांव आया था। मंगलवार दोपहर वह दोस्तों के साथ फोटोशूट के लिए कठउतहा पहुंचा था। इस दौरान फायरिंग हुई। पुलिस ने कार और हमलावरों की पहचान कर ली है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। बाइक में लगी गोली के आधार पर जांच चल रही है।

हाथियों का मूवमेंट पर हाईवे बंद 1 रात में चले 30 किमी

4 गांवों के घर तोड़े, फसल की तहस-नहस

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। जिले में चार जंगली हाथियों का आतंक जारी है। हाथियों के झुंड ने एक रात में 30 किलोमीटर का सफर तय किया। इस दौरान चार गांवों में घुसकर फसलों और घरों को नुकसान पहुंचाया। हाथियों का झुंड सबसे पहले विचारपुर पहुंचा। फिर सिंहपुर रोड पार कर कंचनपुर, हररी और धुरवार गांव होते हुए आगे बढ़ा। रास्ते में आने वाले खेतों और घरों को नुकसान पहुंचाया। धुरवार टोल प्लाजा के पास हाथियों के पहुंचने से शहडोल-बुढार हाईवे को कुछ समय के लिए बंद करना पड़ा।

मंगलवार तड़के हाथी उधिया गांव पहुंचे। यहां सुबह 10 बजे तक विचरण करते रहे। गांव में घुसकर कई घरों में तोड़फोड़ की। किसानों के खेतों में लगी भुट्टे की फसल को नष्ट कर दिया। छोटी-छोटी बाड़ियों में भी हाथी घुस गए। वन विभाग और पुलिस की टीमें लगातार हाथियों की गतिविधियों पर नजर रख रही हैं। अधिकारी लोगों के घरों की छत से हाथियों की निगरानी कर रहे हैं। स्थानीय किसान रमेश ने बताया कि हाथी गांव की बीच बस्ती में घुस आए हैं और फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। ग्रामीणों ने हाथियों को जल्द से जल्द क्षेत्र से बाहर निकालने की मांग की है।

निर्वाचन नामावली त्रुटि रहित बनाने के लिए बीएलओ को दिया गया प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी मध्य प्रदेश भोपाल के द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुक्रम में निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी विधानसभा क्षेत्र 077 सीधी के आदेश अनुसार निर्वाचन नामावली त्रुटि रहित बनाने के लिए बूथ लेबल अधिकारी बीएलओ का प्रशिक्षण कार्यक्रम 15 जुलाई एवं 16 जुलाई को किया जाना प्रस्तावित है। 15 जुलाई को प्रथम बैच का प्रशिक्षण संजय गांधी स्मृति महाविद्यालय सीधी के नवीन भवन में जिसमें सीधी विधानसभा सभा क्षेत्र 077 सीधी के मतदान केन्द्र 01 से 150 तक बीएलओ को विधानसभा स्तर के मास्टर ट्रेनर्स डॉ राजेश साहू, सहायक अध्यापक डॉ मुकेश कुमार यादव, सहायक अध्यापक डॉ विनोद कुमार साकेत, सहायक अध्यापक डॉ राकेश कुमार प्रजापति, सहायक अध्यापक डॉ. उमेश कुमार सोनी सहायक अध्यापक एवं अरुण कुमार मिश्रा, वरिष्ठ व्याखाता के द्वारा संपादित किया गया।

उक्त प्रशिक्षण में बीएलओ को विधिक प्रावधानों के अनुसार निर्वाचन नामावली तैयार करने संबंधी प्रक्रिया घर-घर जाकर सत्यापन करना, मृत मतदाता, स्थानांतरित मतदाता दोहरी प्रविष्टि जैसी जानकारी एवं विशेष गहन पुनरीक्षण के बारे में सतत अवगत कराया गया तथा राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि बीएलए से समन्वय स्थापित कर फॉर्म 06, 07 एवं 08 को बीएलओ एप आदि के माध्यम से बारीकियां से भलीभांति अवगत कराया गया। साथ ही प्रशिक्षण उपरांत ई- वैल्यूएशन ऑनलाइन माध्यम से कराया किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी/सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी एवं समस्त निर्वाचन कार्य मे संलग्न अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। द्वितीय बैच मतदान केन्द्र 151 से 293 तक के बीएलओ का प्रशिक्षण 16 जुलाई को किया जाना है।

जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत ने सुनी 161 आवेदकों की समस्याएं निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जनसुनवाई में अपर कलेक्टर एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा जिले के दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों से आए 161 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अपर कलेक्टर ने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि जिन आवेदन पत्रों में समय सीमा निर्धारित किया जाता है उसको तत्काल विभाग प्रमुख अपने संज्ञान में लेकर निराकरण कर संबंधित हितग्राही को सूचित करे। अपर कलेक्टर ने जनसुनवाई में प्राप्त होने वाले आवेदनों पर पूरी संवेदनशीलता के साथ कार्यवाही करने के निर्देश दिए हैं। इस अवसर पर डिप्टी कलेक्टर एस पी मिश्रा सहित जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

सीड योजना के तहत विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के विद्यार्थियों को परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण के तहत फ्री कोचिंग

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सहायक संचालक पिछड़ा वर्ग तथा अल्पसंख्यक कल्याण सीधी ने जानकारी देकर बताया कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार की सीड योजना के तहत विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के विद्यार्थियों को परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण के तहत फ्री कोचिंग के माध्यम से शैक्षणिक स्तर के उन्नयन से सशक्त बनाने की दिशा में एक पहल है। इस योजना का उद्देश्य विमुक्त, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु समुदाय के विद्यार्थियों को अच्छी गुणवत्ता वाली कोचिंग प्रदान करना है, जिससे उन्हें उच्च शिक्षा एवं रोजगार हेतु प्रतिस्पर्धा परीक्षाओं में सफल होने में सक्षम बनाया जाकर उच्च शिक्षा एवं रोजगार सुनिश्चित किया जा सके। भारत सरकार के विभाग द्वारा यह योजना बड्डी फोर स्टडी संस्था के माध्यम से संचालित की जा रही है। इस योजना में आवेदन करने की अंतिम तिथि 03 अगस्त निर्धारित की गयी है। सहायक संचालक द्वारा समस्त प्राचार्यो को सूचित किया गया है कि इस योजनांतर्गत अधिक से अधिक छात्र/छात्राओं को लाभान्वित किया जाए। साथ ही जिन पात्र छात्र/छात्राओं के पास आवश्यक दस्तावेजों की कमी है, उनके दस्तावेज पूर्ण कराने हेतु आवश्यक कार्यवाही की जाए, ताकि वे भी योजना का लाभ प्राप्त कर सके। योजना का अधिकतम लाभ विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सके।

‘नशे से दूरी है जरूरी’ अभियान के तहत सीधी पुलिस द्वारा भव्य जनजागरूकता रैली का किया गया आयोजन

जिले के सभी थाना व चौकी क्षेत्रों में भी जागरूकता कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिले में पुलिस मुख्यालय भोपाल के निर्देशन में "नशे से दूरी है जरूरी" विशेष अभियान का शुभारंभ 15 जुलाई 2025 को भव्य जनजागरूकता रैली के साथ हुआ। यह अभियान 15 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक जिलेभर में निरंतर रूप से संचालित किया जाएगा, जिसके तहत विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से जनमानस को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराया जाएगा। कार्यक्रम की शुरुआत नशा-मुक्ति शपथ के साथ हुई जिसमे सभी ने मिलकर एक स्वर में न केवल समुदाय, परिवार, मित्र बल्कि स्वयं को भी नशा-मुक्त कराने की शपथ ली क्योंकि बदलाव की शुरुआत अपने आप से होनी चाहिए। इसलिए सबने मिलकर अपने जिले सीधी को नशा-मुक्त कराने का दृढ़ निश्चय किया।

नशा मुक्ति प्रचार वाहन को हरी झंडी दिखा कर किया गया रवाना: अभियान के अंतर्गत एक विशेष नशा मुक्ति प्रचार वाहन को विधायक सीधी रीती पाठक, कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं पुलिस अधीक्षक डॉ. रविंद्र वर्मा द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। यह वाहन जिलेभर में भ्रमण कर हिंदी एवं बघेली भाषा में ऑडियो संदेशों, पोस्टर-बैनरों के माध्यम से नशे के दुष्परिणामों एवं निवारण के उपायों की जानकारी आमजन तक पहुँचाएगा।

इस अवसर पर विधायक रीती पाठक ने कहा कि नशामुक्ति की शुरुआत हमें अपने घर से करनी चाहिए। हर परिवार का सदस्य यदि यह संकल्प ले कि वह नशे से दूर रहेगा, तो समाज स्वतः ही सुरक्षित व समृद्ध बन सकता है। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने कहा कि यह केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि सामाजिक आंदोलन है। जब तक समाज इसमें भागीदार नहीं बनेगा, तब तक पूर्ण सफलता असंभव है। हमें मिलकर इसे जनांदोलन बनाना होगा। पुलिस अधीक्षक डॉ. रविन्द्र वर्मा ने कहा कि नशा न केवल स्वास्थ्य और आर्थिक क्षति पहुंचाता है, बल्कि यह अपराध, घरेलू हिंसा, मानसिक तनाव और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याओं को भी जन्म देता है। युवा वर्ग को जागरूक होना होगा और दूसरों को भी प्रेरित करना होगा।

कलेक्ट्रेट से लेकर लालता चौक तक निकली गई जन जागरूकता रैली : नशा मुक्ति की दिशा में आम नागरिकों को प्रेरित करना, विशेषकर युवाओं को जागरूक बनाना और उन्हें इस सामाजिक बुराई से दूर रखने के उद्देश्य से जागरूकता रैली कलेक्ट्रेट परिसर से प्रारंभ होकर अस्पताल चौक, गांधी चौक होते हुए पुराना बस स्टैंड तक निकाली गई। रैली में लगभग 500 प्रतिभागियों, सीधी पुलिस बल, एनसीसी, स्काउट-गाइड, शासकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राएं एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविंद श्रीवास्तव, उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय अमन मिश्रा, रक्षित निरीक्षक रक्षित केंद्र सीधी वीरेंद्र कुमरे, थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक कन्हैया सिंह बघेल, थाना प्रभारी यातायात निरीक्षक अभिषेक उपाध्याय, प्रभारी थाना जमोड़ी उप निरीक्षक पुष्पेंद्र सिंह सहित पुलिस एवं प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जिलेभर में समानांतर चलेगा जागरूकता अभियान: रैली के समानांतर जिले के समस्त थाना एवं चौकी क्षेत्रों में भी विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। संबंधित थाना/चौकी प्रभारियों द्वारा रैलियों, शपथ ग्रहण, बैनर-होर्डिंग्स एवं जनसंपर्क के माध्यम से आमजन को जागरूक किया गया।

अभियान चलाकर शिकायतों के निराकरण के कलेक्टर ने दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण की समीक्षा करते हुए अधिक संख्या में शिकायतों के लंबित पाए जाने पर कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए अभियान चलाकर शिकायतों के निराकरण के निर्देश दिए हैं। उन्होंने सभी विभाग प्रमुखों को निर्देशित किया है कि सीएम हेल्पलाइन की नियमित समीक्षा करें तथा प्रतिदिन का लक्ष्य निर्धारित कर शिकायतों को निराकृत करायें। कोई भी शिकायत नॉन अटेण्डेड नहीं रहे और निम्न गुणवत्ता से बंद शिकायतों की संख्या न्यूनतम रहे।

उन्होंने कहा कि जून-25 की शिकायतों के निराकरण में सभी विभाग ए-ग्रेड के लिए प्रयास करेंगे। शिकायतकर्ता से संपर्क कर उनकी वैध समस्याओं का तत्परता से निराकरण सुनिश्चित करेंगे। कलेक्टर ने हितग्राही मूलक योजनाओं तथा भुगतान लंबित शिकायतों को प्राथमिकता पर निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने समाधान ऑनलाइन कार्यक्रम में चयनित विषयों से संबंधित शिकायतों को प्राथमिकता पर निराकृत करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने कहा कि सीएम हेल्पलाइन में दर्ज शिकायतों के निराकरण में उदासीनता या लापरवाही बरतने वाले एल1 तथा एल2 अधिकारियों के विरुद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी। बिना पूर्व सूचना के बैठक से अनुपस्थित अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए गए हैं।

बैठक में वनमंडलाधिकारी प्रीति अहिरवार, अपर कलेक्टर अंशुमन राज, उपसंचालक संजय टाइगर रिजर्व राजेश कन्ना, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, डिप्टी कलेक्टर एसपी मिश्रा सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे।

विचार

अमेरिकी कंपनी ने वायदा कारोबार से भारतीय निवेशकों से 2 लाख करोड़ ढगे

अमेरिका की कंपनी जेन स्ट्रीट हाई फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग फर्म है। इसने पिछले 4 सालों में भारत के वायदा कारोबार में ट्रेडिंग के नियमों का उल्लंघन कर लाखों करोड़ रुपए की लूट भारत से की है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेवी) आंख बंद करके बैठी रही। भारत के वायदा कारोबार से जुड़े 91 फ़ीसदी निवेशकों को पिछले 4 सालों से यह कंपनी लूट रही थी। अभी तक जो जानकारी प्राप्त हुई है। उसके अनुसार 2 लाख करोड रुपए से ज्यादा की लूट इसने पिछले वर्षों में की है। इसके पहले के आंकड़ों को अभी तक सेवी ने उजागर नहीं किया है। जब इस मामले की कलई खुली, सेबी ने जेन स्ट्रीट और उसकी सहयोगी कंपनियों पर कार्यवाही करते हुए 4843.57 करोड रुपए जप्त करने के आदेश दिए हैं। इस कंपनी ने पिछले दो वर्ष जिसमें वर्ष 2024 में लगभग 50000 करोड रुपए 2025 में 74812 करोड रुपए का घोटाला किया है। कंपनी ने निफ्टी के 50 इंडेक्स वाले शेयरों में हाई फ्रीक्वेंसी ट्रेडिंग वाले सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए, पिछले 4 वर्षों से धोखाधड़ी की जा रही है। कंपनी सुबह के समय भारी मात्रा में वायदा कारोबार के शेयर और फ्यूचर्स में कारोबार करती थी। वायदा कारोबार में इन कंपनियों की खरीदी के कारण जब तेजी आ जाती थी। तो खरीदे हुए शेयर कुछ ही सेंकड़ों में बेचकर भारी मुनाफा कमाकर अमेरिका ले जाती थी। इसकी जानकारी देने वाले विहसिल ब्लोअर मयंक बंसल का दावा है। जेन स्ट्रीट ने जनवरी 2023 से मार्च 2025 तक 36502 करोड रुपए का अवैध मुनाफा कमाया है। इसकी सहयोगी कंपनियों के आंकड़े को भी सामने लाया जाए तो पिछले 4 वर्षों में वायदा कारोबार में जो 91 फ़ीसदी छोटे भारतीय निवेशक थे। उन्हें लाखों करोड़ों रुपए का घाटा हुआ है। अमेरिका की कंपनी ने वायदा कारोबार में इंडेक्स की 50 कंपनियों में शॉर्ट ऑप्शन का इस्तेमाल करते हुए भारी मुनाफा कमाया है। भारतीय शेयर बाजार से कमाए गए मुनाफे को कंपनी अमेरिका ले गई है। भारतीय शेयर बाजार का पैसा सिंगापुर और अमेरिका में बड़े पैमाने पर अवैध तरीके से ट्रांसफर किया गया है। वायदा कारोबार के भारतीय 91 फ़ीसदी निवेशकों को भारी नुकसान हुआ है। वायदा कारोबार के 50 इंडेक्स वाली सूची के शेयरों में निवेश करने वाले धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। 3 जुलाई 2025 को सेबी ने जेन स्ट्रीट और उसकी सहयोगी कंपनियों के कारोबार पर प्रतिबंध लगाया है। सेबी ने 4843.57 करोड रुपए जप्त करने के आदेश दिए हैं। इस कंपनी ने लाखों करोड़ रुपए की लूट भारतीय शेयर बाजार से अवैध तरीके से की है। सेबी और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज को पल-पल की खबर होती है। शिकायत करने के बाद भी दोनों नियामक संस्थाओं ने कोई कार्यवाही कंपनी पर नहीं की। 4 साल से यह गोरख धंधा चलता रहा, अब जाकर कार्रवाई की गई है। अमेरिका की कंपनी अमेरिका में मामला दर्ज कराने की बात कर रही है। भारतीय शेयर बाजार, विदेशी कंपनियों को मुनाफा देने वाला सबसे बड़ा बाजार बना हुआ है। विदेशी निवेशकों के लिए भारतीय शेयर बाजार सोने के अंडे देने वाला बाजार है। भारत की वित्तीय संस्थाओं द्वारा पिछले एक दशक में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और मुंबई स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कंपनियों में भारी निवेश किया है। म्युचुअल फंड के जरिये करोड़ों भारतीय छोटे निवेशकों ने शेयर बाजार में निवेश किया है। पिछले 10 साल से विदेशी निवेशकों के लिये मुनाफा वसूली का सबसे बड़ा बाजार भारत का शेयर बाजार है। दुनिया के किसी भी शेयर बाजार में इस तरह की तेजी देखने को नहीं मिली, जो भारतीय शेयर बाजारों में देखने को मिली। निवेशकों के हितों को सुरक्षित रखने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी सेबी की होती है। मुंबई स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज को भी इस तरह के लेनदेन पर निगाह रखनी थी। समय रहते कार्रवाई करनी थी। तीनों आंख बंद करके बैठे रहे। रही-सही कसर केंद्रीय प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने पूरी की है। जब भारत से अरबों रुपए की राशि हर महीने विदेश जा रही थी। शेयर बाजार के जरिए काले धन को विदेशों से भारत के शेयर बाजार में निवेश किया लाया जा रहा था। यहां से मुनाफा बसूली करके धन वापस ले जाया जा रहा था। इस मामले की कई शिकायतें पिछले वर्षों में हुई हैं। किसी भी संस्था ने जांच करने की जहमत नहीं उठाई।

मतदाता सूची में सुधार पर सुप्रीम सहमति सराहनीय

ललित गर्ग

बिहार में मतदाता सूची सुधार पर सुप्रीम कोर्ट की हरी झंडी सिर्फ एक न्यायिक फैसला नहीं, बल्कि लोकतंत्र के मूल्य को पुष्ट करने वाला ऐतिहासिक एवं प्रासंगिक निर्णय है। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को बिहार में मतदाता सूची की समीक्षा के लिए आधार, राशन और वोटर कार्ड को भी मान्यता देने का सुझाव देकर आम लोगों की मुश्किल हल करने की कोशिश की है। इससे प्रक्रिया आसान होगी और आशंकाओं को कम करने में मदद मिलेगी। बेशक, फर्जी नाम मतदाता सूची में नहीं होने चाहिए लेकिन ऐसे अभियानों के दौरान आयोग का जोर ज्यादा से ज्यादा नाम वोटर लिस्ट से निकालने के बजाय, इस पर होना चाहिए कि एक भी नागरिक चुनावी प्रक्रिया में शामिल होने से वंचित न रह जाए।

वपक्ष को चाहिए कि वह इस फैसले को राजनीतिक हार न माने, बल्कि इसे एक अवसर माने, जनविश्वास अर्जित करने का, लोकतंत्र में आस्था बढ़ाने का और सबसे जरूरी, राष्ट्रहित को राजनीति से ऊपर रखने का। मतदाता सूची में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) का कार्य केवल बिहार ही नहीं, देश के अन्य राज्यों में प्राथमिकता के आधार पर प्रारंभ करना चाहिए।

भारतीय लोकतंत्र में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय सर्वोपरि होता है। चुनाव आयोग यदि चुनाव कराने को तैयार है, और इसकी जुड़ी किन्हीं प्रक्रियाओं में कोई त्रुटि या खामी है तो उसका सुधार करना संविधान सम्मत है, तो फिर इस पर प्रश्नचिन्ह लगाने का अधिकार किसी भी राजनीतिक दल को नहीं होना चाहिए। लेकिन जो प्रश्न जनता के मानस को उद्वेलित करता है, वह यह है कि विपक्ष बार-बार चुनावी प्रक्रियाओं, राष्ट्रीय हितों या सुरक्षा से जुड़े मुद्दों पर भी एकमत होकर विरोध करता है, आखिर क्यों? बिहार में एसआईआर को लेकर जो याचिकाएं और बहसें सामने आईं, उनमें एक प्रमुख तर्क यह था कि समय उपयुक्त नहीं है, सरकार अस्थिर है, या सामाजिक समीकरण तैयार नहीं हैं। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि जनता को प्रतिनिधित्व देने का अधिकार सर्वोपरि है। लेकिन त्रुटिपूर्ण या फर्जी मतदाता सूची से चुनाव कराना भी लोकतंत्र का अपमान है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि देर-सवेर नहीं, संवैधानिक कर्तव्य को समय पर निभाना जरूरी है।

अदालत ने एसआईआर पर कोई आदेश नहीं दिया है, लेकिन अपने इरादे की ओर इशारा तो कर ही दिया है। अदालत ने टाइमिंग को लेकर जो सवाल उठाया, वह उचित प्रतीत होता है। बिहार में इसी साल के आखिर तक विधानसभा चुनाव होने हैं। ऐसे में इतनी विस्तृत कवायद के लिए शायद उतना वक्त न मिल पाए, जितना मिलना चाहिए। बिहार में एसआईआर को लेकर जो असमंजस है, उसकी एक वजह निश्चित ही टाइमिंग है। जिनके पास जरूरी डॉक्युमेंट नहीं हैं, वे इतनी जल्दी उनका इंतजाम नहीं कर पाएंगे। हालांकि आयोग ने भरोसा दिलाया है कि किसी भी व्यक्ति को भी अपनी बात रखने का मौका दिए बिना मतदाता सूची से बाहर नहीं किया जाएगा। वैसे बिहार में चुनाव को देखते हुए ही फर्जी मतदाताओं की संख्या बढ़ी या तथाकथित राजनीतिक दलों ने इन फर्जी मतदाताओं को बढ़ाया है। ऐसे में इन फर्जी मतदाताओं पर कार्रवाई अपेक्षित है। यह मामला केवल बिहार तक सीमित नहीं रहना चाहिए। दूसरे राज्यों में मतदाता सूचियों की समीक्षा किस तरह होगी, यह बिहार में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया पर निर्भर करेगा। ऐसे में स्वाभाविक ही नजरें इस बात पर टिकी हैं कि सुप्रीम कोर्ट में आखिरकार इस प्रक्रिया का कैसा स्वरूप तय होता है?भारतीय राजनीति में विपक्ष का कार्य सरकार की नीतियों पर निगरानी रखना है, आलोचना करना है, लेकिन वह आलोचना रचनात्मक होनी चाहिए, राष्ट्र-विरोधी नहीं। आज हम देख रहे हैं कि आर्टिकल 370 हटाना हो, नागरिकता संशोधन अधिनियम-सीएए, राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर-एनआरसी जैसे कानून हों, अग्निपथ योजना हो, या राम मंदिर निर्माण-लगभग हर मुद्दे पर विपक्ष ने एकमत होकर विरोध किया है। चाहे चीन या पाकिस्तान से जुड़ी संवेदनशील मसले हों, या फिर राष्ट्रीय सुरक्षा के निर्णय, विपक्ष अक्सर उन बिंदुओं पर एक सुर में सरकार का विरोध करता है, जबकि ऐसे राष्ट्रीयता के मुद्दों पर विपक्ष को सरकार एवं देश के साथ एकजुटता दिखानी चाहिए। यह संयोग नहीं, एक दूषित राजनीतिक रणनीति बनती जा रही है कि 'जो सरकार करे, उसका विरोध करो', चाहे मुद्दा देशहित का ही क्यों न हो। इन स्थितियों में आम जनता का एक बड़ा सवाल है कि विपक्ष देश के साथ है या सिर्फ सत्ता की भूख के साथ? क्या चुनाव प्रक्रिया पर विरोध करना लोकतंत्र का मज़ाक नहीं है? क्या न्यायपालिका के निर्णयों को चुनौती देना सिर्फ स्वार्थ की राजनीति नहीं? क्या राष्ट्रीय मुद्दों पर सरकार के साथ खड़े होने से विपक्ष की राजनीति कमजोर हो जाएगी? जब विपक्ष सिर्फ विरोध करने के लिए विरोध करता है, तो उसका नैतिक बल कमजोर होता है, और जनता का विश्वास टूटता है।

भारतीय राजनीति को अब रचनात्मक विपक्ष की ज़रूरत है, ऐसा विपक्ष जो सत्ता में नहीं है, फिर भी राष्ट्र के लिए सत्ता के साथ खड़ा हो सकता है। जो यह समझ सके कि लोकतंत्र सरकार और विपक्ष दोनों से चलता है, लेकिन राष्ट्र सबसे ऊपर है। बिहार में चुनाव आयोग को सुप्रीम कोर्ट की अनुमति इस बात का प्रतीक है कि संस्थाएं अभी भी न्याय और संवैधानिकता की रक्षा कर रही हैं। लेकिन विपक्ष यदि इस निर्णय पर भी नकारात्मक रवैया अपनाता है, तो यह जनता की आकांक्षाओं, लोकतांत्रिक मूल्यों और विकासशील भारत की दिशा के विरुद्ध होगा। विपक्ष को चाहिए कि वह अपनी राजनीति को जनहित से जोड़े, जनविरोध से नहीं। विपक्ष यदि राष्ट्रहित में सोचने की दिशा में खुद को परिवर्तित नहीं करता, तो वह धीरे-धीरे प्रासंगिकता खो देगा।

भारतीय लोकतंत्र की नींव निष्पक्ष, पारदर्शी और समावेशी चुनावों पर टिकी होती है। इसी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को मज़बूत बनाने की दिशा में बिहार में चुनाव आयोग द्वारा शुरू किया गया मतदाता सूची सुधार अभियान हाल ही में राष्ट्रीय बहस का केंद्र बना। लेकिन जिस बात ने सबसे अधिक ध्यान खींचा, वह यह है कि इस पूरी कवायद के दौरान विपक्ष एक बार फिर एकजुट होकर इसका विरोध करता नजर आया, भले ही मामला राष्ट्रहित और लोकतंत्र की मजबूती से जुड़ा हो। बिहार में राज्य निर्वाचन आयोग ने वोटर लिस्टों को दुरुस्त करने, फर्जी वोटरों की छंटनी, और नए योग्य मतदाताओं को जोड़ने का जो कार्य प्रारंभ किया, वह एक सामान्य प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि एक लोकतांत्रिक शुद्धिकरण था। यह सुधार न केवल चुनावों को पारदर्शी बनाता है, बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा भी करता है। परन्तु कुछ राजनीतिक दलों ने इस प्रक्रिया पर आपत्ति जताई और इसे जातीय आंकड़ों, राजनीतिक संतुलन और चुनावी गणित से जोड़कर कोर्ट का रुख किया।

सुप्रीम कोर्ट ने साफ शब्दों में कहा कि मतदाता सूची का शुद्धिकरण संविधान सम्मत प्रक्रिया है और इसे बाधित नहीं किया जा सकता। अदालत ने चुनाव आयोग की कार्रवाई को न केवल वैध बताया, बल्कि उसे लोकतंत्र के लिए आवश्यक भी बताया। यह फैसला यह भी दर्शाता है कि अब समय आ गया है जब चुनावी ईमानदारी को राजनीतिक शोरगुल और वोट बैंक की राजनीति के शोर में दबाया नहीं जा सकता। विपक्ष की प्रतिक्रिया लगभग स्वचालित होती जा रही है, चाहे मुद्दा हो आर्थिक सुधार का, रक्षा नीति का, विदेश नीति का, या अब मतदाता सूची सुधार का। प्रश्न यह उठता है कि क्या हर सुधार प्रक्रिया, चाहे वह कितनी भी लोकतांत्रिक या पारदर्शी हो, विपक्ष के लिए मात्र एक राजनैतिक खतरा है? विपक्ष का यह रवैया यह दर्शाता है कि उसे संवैधानिक संस्थाओं पर भरोसा कम और अपनी राजनीतिक गणनाओं पर भरोसा अधिक है।

एक सामान्य नागरिक के लिए सबसे बड़ा अधिकार है वोट देना। यदि कोई सुधार प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि एक भी फर्जी वोटर सूची में न हो, कोई भी योग्य मतदाता छूटे नहीं, जाति, धर्म या राजनीति से ऊपर उठकर नागरिकता के आधार पर मतदाता सूची बने, तो फिर उसका विरोध क्यों?विपक्ष इस डर से ग्रस्त है कि यदि मतदाता सूची साफ-सुथरी हो गई, तो उनके कथित परंपरागत वोट बैंक कमजोर हो सकते हैं। उन्हें डर है कि जातीय और क्षेत्रीय समीकरण बदल सकते हैं। लेकिन यह तर्क लोकतंत्र के मूल सिद्धांत के विरुद्ध है। लोकतंत्र 'जो है, उसे प्रतिबिंबित करे', न कि 'जो चाहिए, उसे निर्मित करे'।

कौशलता विकास परिवर्तन के वाहक युवाओं की समृद्धि के विकास का मूल मंत्र हैं

सृष्टि रचयिता ने मानव को प्राकृतिक रूप से बौद्धिक क्षमता का अभूतपूर्व खजाना दिया है।बस! ज़रूरत है उसे पहचान कर निखारने की,जिसके बलपर सफ़लताओं की हदें पार की जा सकती है! मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि खास करके हर मानव में अपने अपने स्तरपर अलग-अलग कौशलता समाई हुई है, बस इसे पहचान कर उसका विकास करना है, जिसे हम कौशलता विकास दिवस के नाम से मनातें हैं।आज हम इस विषय पर चर्चा इसलिए कर रहे हैं क्योंकि हम 15 जुलाई 2025 को विश्व युवा कौशलता दिवस मना रहे हैं, इसे 2014 से संयुक्त राष्ट्र ने 15 जुलाई को प्रतिवर्ष विश्व युवा कौशल दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया था, जिसे प्रथम बार 15 जुलाई 2015 को मनाया गया था और हर साल नई थीम के साथ मनाया जाता है। वर्ष 2025 की थीम एआई और डिजिटल कौशल के माध्यम से युवा सशक्तिकरण रखा गया है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से कौशलता विकास पर चर्चा करेंगे।

साथियों बात अगर हम विश्व युवा कौशल दिवस 2025 की करें तो, सामाजिक-आर्थिक सुधार की दिशा में ठोस प्रयास है जो जलवायु परिवर्तन, संघर्ष, निरंतर गरीबी, बढ़ती असमानता, तेजी से तकनीकी परिवर्तन, जनसांख्यिकीय संक्रमण और अन्य जैसी चुनौतियों से जुड़े हुए हैं।युवा महिलाओं औरलड़कियों, विकलांग युवाओं, गरीब परिवारों के युवाओं, ग्रामीण समुदायों, स्वदेशी लोगों और अल्पसंख्यक समूहों के साथ-साथ हिंसक संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता के परिणाम भुगतने वाले लोगों को कई कारकों के संयोजन के कारण बाहर रखा जाता है, इसके अलावा, संकट ने काम की दुनियाँ में पहले से ही कई बदलावों को तेज कर दिया है, जो उन कौशल और दक्षताओं के बारे में अनिश्चितता की परतें जोड़ते हैं जिससे हम कौशलता से ऐसा दक्ष हो जाते है कि हम नौकरी पाने वाले नहीं बल्कि नौकरी देने वाले बन जाते है। संयुक्त राष्ट्र और इसकी एजेंसियां,जैसे कि यूनेस्को- यूएनईवीओसी, काम की दुनियाँ में पहुंची बाधाओं को कम करके इन चुनौतियों का समाधान करने में मदद करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं, यह सुनिश्चित करते हुए प्राप्त कौशल को मान्यता प्राप्त और प्रमाणित किया जाता है, और बाहर के लिए कौशल विकास के अवसर प्रदान करता है। स्कूली युवा और जो रोजगार, शिक्षा या प्रशिक्षण (एनईईटी) में नहीं हैं 2030 एजेंडा के लिए कार्रवाई के इस दशक के दौरान, सकारात्मक परिवर्तन और नवाचार उत्पन्न करने के लिए वैश्विक प्रक्रियाओं में युवाओं की पूर्ण भागीदारी महत्वपूर्ण है।हमारे माननीय पीएम के ड्रीम प्रोजेक्टस में से एक है। भारत ने इसके लिए एक अलग से मंत्रालय का गठन किया है जो उचित प्रशिक्षण प्रदान करने, अच्छे काम रोजगार और उद्यमिता के लिए कौशलता प्रदान करने के महत्व पर जोर देता है और अनेक कार्यक्रमों का आयोजन कर कौशलता विकास के महत्व पर जन जागरण बहुत ही जोर शोर से करता है

साथियों बात अगर हम विश्व कौशलता दिवस 15 जुलाई 2025 के बारे में जानने की करें तो, थीम-2025 के लिए, विश्व युवा कौशल दिवस की थीम एआई और डिजिटल कौशल के माध्यम से युवा सशक्तिकरण है। महत्व-यह दिन युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (टीवीईटी) को बढ़ावा देने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के युग में प्रासंगिक कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है।आयोजन-इस दिन, विभिन्न कार्यक्रम,

कार्यशालाएं और संवाद आयोजित किए जाते हैं, जिनमें युवाओं को कौशल विकास, रोजगार और उद्यमिता के अवसरों के बारे में जानकारी दी जाती है।भागीदारी-शिक्षक, अभिभावक, मार्गदर्शक,प्रशिक्षण प्रदाता और अन्य सभी को यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कि युवा आवश्यक कौशल प्राप्त करें। दिनांक 12 जुलाई 2025 को देर शाम माननीय उपराष्ट्रपति ने एक कार्यक्रम में संबोधित करते हुए कौशल का विकास के बारे में कहा भारतीय संविधान में 22 दृश्य चित्रणों में एक गुरुकुल की भी छवि है। हम हमेशा से ज्ञान के दान में विश्वास करते रहे हैं। कोचिंग सेंटरों को अपने बुनियादी ढांचे का उपयोग कौशल केंद्रों में बदलने के लिए करना चाहिए। मैं सिविल सोसाइटी और मेरे सामने और बाहर मौजूद जनप्रतिनिधियों से आग्रह करता हूँ कि वे इस बीमारी की गंभीरता को समझें। उन्हें शिक्षा में विवेकशीलता बहाल करने के लिए एकजुट होना होगा। हमें कौशल के लिए प्रबल प्रशिक्षण की सख्त आवश्यकता है।

साथियों बात अगर हम युवा कौशलता के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदमों की करें तो, युवाओं की स्किल डेवलपमेंट के लिए उठाए गए कदम निम्नलिखित हैं, औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र (आईटीआई)- वर्ष 1950 में परिकल्पित, का उद्देश्य भारत में मौजूदा दीर्घकालिक प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र का विस्तार और आधुनिकीकरण करना है। पीएम स्किल्स विकास योजना (पीएमकेवीवाई)- 2015 में शुरू की गई, इसका उद्देश्य भारत के युवाओं को मुफ्त स्किल्स प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करना है। पीएम स्किल्स विकास योजना-यह भारत के युवाओं को 400 सेअधिक स्किल्स पाठ्यक्रम उपलब्ध कराकर रोजगार योग्य स्किल्स के साथ सशक्त बनाने के लिए 2021 की शुरुआत की गई है। पूर्व सीखने की मान्यता- इसे 2015 में व्यक्तियों द्वारा अर्जित पूर्व स्किल्स को पहचानने के लिए लॉन्च किया गया था। यह पीएमके वीवाई के प्रमुख घटकों में से एक है। इसके तहत एक निश्चित स्किल्स वाले या पूर्व सीखने के अनुभव वाले व्यक्तिको राष्ट्रीय स्किल्स योग्यता फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) के अनुसार ग्रेड के साथ आरपीएल के तहत मूल्यांकन और प्रमाणित किया जाता है। राष्ट्रीय कैरियर सेवा परियोजना- इसके साथ पंजीकृत नौकरी चाहने वालों के लिए अपनी राष्ट्रीय कैरियर सेवा (एनसीएस) परियोजना के माध्यम से मुफ्त ऑनलाइन कैरियर स्किल्स प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए 2015 में शुरू की गई।कौशल प्रबंधन और प्रशिक्षण केंद्रों का प्रत्यायन (स्मार्ट)- यह एकल खिड़की आईटी अनुप्रयोग प्रदान करता है जो स्किल्स पारिस्थितिकी तंत्र में प्रशिक्षण केंद्रों (टीसी) की मान्यता, ग्रेडिंग, संबद्धता और निरंतर निगरानी पर केंद्रित है।आजीविका के लिए स्किल्स अधिग्रहण और ज्ञान जागरूकता (संकल्प)- इसका ध्यान अभिसरण और समन्वय के माध्यम से जिला-स्तरीय स्किल्स पारिस्थितिकी तंत्र पर है। यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसे विश्व बैंक के साथ सहयोग किया गया है।

निर्धारित लक्ष्य के अनुसार अनिवार्य रूप से कराएं वृक्षारोपण - कमिश्नर

ई आफिस में ऑनबोर्ड न होने वाले अधिकारियों की रूकेगी वेतनवृद्धि

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने कहा कि सभी संभागीय अधिकारी फाइल तथा पत्राचार का पूरा कार्य ई आफिस के माध्यम से करें। सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं और पत्र भी इसी माध्यम से एक-दूसरे कार्यालय को भेजें। अपने कार्यालय में भी अधीनस्थ स्तर तथा जिलों से फाइल का मूवमेंट ई आफिस के माध्यम से ही करें। जो कार्यालय 15 जुलाई को शाम 5 बजे तक ई आफिस में ऑनबोर्ड नहीं होंगे उनके प्रभारी अधिकारी की एक वार्षिक वेतनवृद्धि रोकने की कार्यवाही की जाएगी। ई आफिस सिस्टम में फाइल क्रियेट करें, फाइल मूव करें और उसी में फाइल सुरक्षित भी रख सकते हैं। विभागीय कार्यों की प्रगति की रिपोर्ट भी ई आफिस से ही भेजें।

कमिश्नर ने कहा कि एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत संभाग के सभी जिलों में पौधे रोपित किए जा रहे हैं। प्रत्येक विकासखण्ड के लिए एक लाख पौधे रोपित करने का लक्ष्य रखा गया है। सभी अधिकारी उपयुक्त और सुरक्षित स्थल में पौधे अवश्य रोपित कराएं। फोरलेन सड़कों के डिवाइडर, तालाबों के किनारे, गौशाला परिसर, पर्यटन स्थलों, धार्मिक स्थलों, शिक्षण संस्थानों, आंगनवाड़ी केन्द्र, छात्रावास परिसर तथा कार्यालय परिसरों में पौधे रोपित कराएं। जिला महाप्रबंधक उद्योग औद्योगिक इकाईयों के परिसरों में वृक्षारोपण कराएं। उप संचालक खनिज सभी खदान संचालकों से पौधे रोपित कराएं। उपायुक्त जीएसटी व्यापारिक संगठनों से वृक्षारोपण कराएं। सबके सहयोग और प्रयासों से ही वृक्षारोपण का लक्ष्य पूरा होगा। निर्धारित लक्ष्य के अनुसार शत-प्रतिशत पौधे रोपित करें। स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों तथा आमजनों को भी इस अभियान में सहभागी बनाएं।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि अधिकारियों और कर्मचारियों के पदोन्नति के लिए समिति की बैठक की सभी तैयारियाँ कर लें। सभी के गोपनीय प्रतिवेदन प्रेषित कर दें। संभाग के सभी जिलों में अच्छी वर्षा हो रही है। शहरी क्षेत्र में नालों की सफाई का कार्य प्राथमिकता से कराएं। जल भराव वाले क्षेत्रों में जल निकासी की व्यवस्था करें। सीएम हेल्पलाइन तथा समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में शामिल सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का तत्परता से निराकरण करें। राजस्व विभाग, खाद्य विभाग, ग्रामीण विकास विभाग, शहरी विकास विभाग, श्रम विभाग, पशुपालन विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा ऊर्जा विभाग में बड़ी संख्या में आवेदन पत्र लंबित हैं। इनके निराकरण पर विशेष ध्यान दें। सीएम हेल्पलाइन में संभाग के तीन जिले ए श्रेणी में हैं। शेष तीन जिलों को भी प्रकरणों का निराकरण करके ए श्रेणी में लाएं। अक्षय ऊर्जा विभाग द्वारा प्रत्येक जिले में एक-एक आदर्श ऊर्जा ग्राम विकसित किया जाएगा। इसके लिए पाँच हजार से अधिक आबादी वाले उपयुक्त गांव का प्रस्ताव प्रस्तुत करें।

बैठक में बाढ़ से राहत तथा बचाव, पेयजल व्यवस्था, साफ-सफाई एवं उपचार व्यवस्था के संबंध में भी निर्देश दिए गए। बैठक में संयुक्त आयुक्त सुदेश मालवीय, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, एसडीओ वन हितेश खण्डेलवाल, डीन मेडिकल कालेज डॉ सुनील अग्रवाल, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ एमएल गुप्ता, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, संयुक्त संचालक महिला एवं बाल विकास शशि श्याम, मुख्य अभियंता ऊर्जा प्रमा पाण्डेय, सहायक संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ आरपी सिंह तथा अन्य संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

धरती आबा अभियान जनजातीय समुदाय को मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। प्रदेश की नगरीय विकास एवं आवास राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने कहा कि प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान के अंतर्गत धरती आबा उन्नत ग्राम जन भागीदारी अभियान जनजातीय समुदाय के व्यक्तियों को मुख्य धारा से जोडने का प्रयास है। केन्द्र और राज्य सरकार जन-मन कार्यक्रम के माध्यम से एक-एक आदिवासी परिवार तक पहुंचकर उनका जीवन बदलने का प्रयास कर रही है। राज्यमंत्री श्रीमती बागरी मंगलवार को धरती आबा उन्नत ग्राम जन भागीदारी अभियान के जनपद पंचायत सभागार मझगवां में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रही थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सांसद सतना श्री गणेश सिंह ने कहा कि विकसित भारत तभी बनेगा जब आखिरी पंक्ति में खडा हुए व्यक्ति इस कार्य में बराबर का हिस्सेदार बनेगा। उन्होंने कहा कि यह अभियान समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति के जीवन में बदलाव लाने का माध्यम है। इस मौके पर विधायक चित्रकूट सुरेन्द्र सिंह गहरवार, जिला पंचायत अध्यक्ष रामखेलावन कोल, उपाध्यक्ष सुष्मिता सिंह, जनपद अध्यक्ष रेणुका जायसवाल, जिलाध्यक्ष भगवती प्रसाद पाण्डेय, सीईओ जिला पंचायत सुश्री संजना जैन, जिला पंचायत सदस्य संजय सिंह, सरपंच मझगवां सम्पतिया बाई आरख, रामऔतार दद्दा, प्रबल श्रीवास्तव, निरंजन जायसवाल, जिला संयोजक डॉ. अरूण शुक्ला, एसडीएम एपी द्विवेदी, डीपीओ राजीव सिंह सहित जनपद स्तरीय अधिकारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ राज्यमंत्री श्रीमती प्रतिमा बागरी ने महात्मा गांधी और भगवान बिरसा मुण्डा के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन कर किया। इस मौके पर राज्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष को जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। धरती आबा अभियान आदिवासी समुदाय के लोगों को विकास की मूल धारा से जोडने की पहल है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पचमढी में कैबिनेट की बैठक कर राजा भभूत सिंह के नाम पूरी बैठक को समर्पित किया। जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए आंदोलन करने वाले भगवान बिरसा मुण्डा को पृथ्वी के पिता के रूप में भी जाना जाता है। आदिवासी समुदाय से अनेक बडे-बडे महापुरूष हुए है। जिन्होंने समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने बताया कि अभियान के तहत वंचित और विकास से दूर हर बस्ती और हर घर तक मूलभूत सुविधाओं को पहुंचाया जायेगा। उन्होंने कहा कि आदिवासी समुदाय के भाई-बहनों के जीवन में व्यापक रूप से परिवर्तन हुआ है और यह आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से बढ रहे हैं।

कार्यक्रम में सांसद गणेश सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संकल्प है कि जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन में बदलाव नहीं होगा। तब तक देश का विकास समुचित रूप से नहीं हो सकता। धरती आबा अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री ने इन सबके जीवन में बदलाव लाने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने बताया कि सतना जिले के 286 गांव के 25 हजार 450 आदिवासी समुदाय के परिवारों की 97 हजार 259 जनसंख्या के जीवन में बदलाव लाने का लक्ष्य अभियान के तहत रखा गया है। उन्होंने कहा कि भारत की संप्रभूता और सांस्कृतिक पहचान आदिवासी समुदाय से शुरू हुई है। स्वतंत्रता का आंदोलन हो या धरती की देखभाल सभी कार्यों में आदिवासी समुदाय का सबसे बडा योगदान रहा है। संकल्प के साथ शुरू हुए अभियान में शत-प्रतिशत परिवारों को योजनाओं के लाभ से जोडा जायेगा। धरती आबा अभियान आदिवासी समाज के जीवन को बदलने का अभियान है।

रीवा के संजय गांधी अस्पताल में फिर हंगामा

मरीज की मौत, डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप, ट्रेनी डॉक्टरों के भरोसे छोड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा में संजय गांधी अस्पताल में मंगलवार को एक मरीज की मौत के बाद परिजनों ने जमकर हंगामा किया। परिजनों ने मुख्य द्वार पर धरना देकर डॉक्टरों पर लापरवाही का आरोप लगाया। आधे घंटे तक चले हंगामे के बाद पुलिस की समझाइश पर मामला शांत हुआ।

जानकारी के अनुसार, सीधी जिले के चुरहट के बड़खरा निवासी राज लाल यादव (25) को एक सप्ताह पहले बुखार की शिकायत पर भर्ती कराया गया था। परिजनों का आरोप है कि स्थिति में सुधार की बजाय मरीज की हालत लगातार बिगड़ती गई। डॉक्टर कभी मस्तिष्क में तो कभी किडनी, लीवर और गुर्दे में समस्या बताते रहे। मृतक के चाचा राम विसर्जन यादव ने आरोप लगाया कि मरीज का उचित इलाज नहीं किया गया। ट्रेनी और जूनियर डॉक्टरों के भरोसे छोड़ दिया गया, जिससे उनकी जान चली गई। हालांकि, अस्पताल प्रबंधन ने लापरवाही के आरोपों को निराधार बताया है।

सीएमओ अलख प्रकाश ने बताया कि मरीज को मल्टी ऑर्गन प्रॉब्लम थी और डायलिसिस किया जा रहा था। उसे बचाने का पूरा प्रयास किया गया।

जनसुनवाई में 81 प्रकरणों की हुई सुनवाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में सीईओ जिला पंचायत मेहताब सिंह गुर्जर, अपर कलेक्टर सपना त्रिपाठी एवं संयुक्त कलेक्टर राजेश सिन्हा ने 81 आवेदनों की सुनवाई की। जनसुनवाई में प्राप्त आवेदनों को संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्रेषित कर कार्यवाही किए जाने के निर्देश दिए गए।

जनसुनवाई में कृष्णबिहारी शुक्ला अमवा निवासी ने जर्जर मकान को गिराए जाने का आवेदन दिया। जनपद रीवा के सीईओ को परीक्षण कर तत्काल कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया। फूलेन्द्र सिंह बीरखाम, अमित पटेल चन्द्रपुर तथा रामाश्रय साकेत एवं नंदीलाल कोष्टा निवासी के अवैध कब्जा हटाने के आवेदनों पर संबंधित तहसीलदार को कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए। मुद्रिका प्रसाद बहेलिया निवासी गोविंदगढ़ तथा रमेश प्रसाद पाण्डेय निवासी भनिगवां के सीमांकन के आवेदन को नायब तहसीलदार गोविंदगढ़ को प्रेषित किया गया।

इसी प्रकार नईमुद्दीन शेख निवासी बरहदी के खाद्यान्न पर्ची जारी करने के आवेदन को सीईओ रायपुर कर्चुलियान को, राजाराम साकेत भोलगढ़ निवासी के मनरेगा मजदूरी भुगतान के आवेदन को सीईओ जिला पंचायत को तथा बालकृष्ण निवासी गोंदकला के भूमि के मुआवजा प्रदाय किए जाने के आवेदन को एसडीएम त्योंथर को कार्यवाही हेतु प्रेषित किया गया। गया प्रसाद साकेत निवासी घोपी के फर्जी ऋण पुस्तिका के बदलने व जांच कराने के आवेदन को एसडीएम मनगवां को कार्यवाही के लिए निर्देशित किया गया। जबकि रमेश कुमार त्रिपाठी गुढ़वा के आवास का लाभ दिलाने के आवेदन को ग्रामीण विकास विभाग को कार्यवाही हेतु प्रेषित किया गया। भुवनेश्वर मिश्रा निवासी सलैया के नक्शा सुधार के आवेदन पर एसडीएम मनगवां को कार्यवाही करने तथा काशी प्रताप सिंह डिहिया के बेदखली के आवेदन पर तहसीलदार गोविंदगढ़ को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। जनसुनवाई में उर्रहट निवासी राजकुमार कुशवाहा एवं ढेकहा निवासी पवन मिश्रा के ढीले विद्युत तार को ऊपर किए जाने के आवेदनों पर विद्युत मंडल को कार्यवाही किए जाने हेतु निर्देश दिए गए।

युवाओं को कौशल दक्षता प्राप्त करना आवश्यक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित जन शिक्षण संस्थान द्वारा युवाओं को कौशल के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से युवा कौशल दिवस का आयोजन ग्राम करहिया में किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हायर सकेण्डरी विद्यालय के प्राचार्य राजकुमार पाण्डेय ने कहा कि नई शिक्षा नीति के अनुसार सभी विद्यालयों में कौशल विकास से संबंधित प्रशिक्षण देना आवश्यक है। प्रशिक्षण फैशन डिजायनिंग, कम्प्यूटर डाटा आपरेटर, ब्यूटी वेलनेस आदि विषयों में दिया जा सकता है। इस तरह के प्रशिक्षण में अपना व्यवसाय भी स्थापित किया जा सकता है। संस्थान के निदेशक सुनील शुक्ला द्वारा संस्थान द्वारा विभिन्न प्रकार के स्वरोजगार मूलक कोर्स के विषय में जानकारी दी गई। उन्होंने कहा कि समय की माँग है कि शिक्षण के साथ-साथ विद्यार्थी अपनी रूचि के अनुसार कोई न कोई ऐसा प्रशिक्षण हासिल करे जिससे आगे चलकर वह सफल उद्यमी बन सके। कार्यक्रम में संस्थान के कार्यक्रम अधिकारी राज्यवर्धन तिवारी, राजेश मिश्रा, प्रशिक्षिका रश्मि नामदेव तथा विद्यालय के शिक्षकगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

रोजगार मेला आज आईटीआई रीवा में

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। युवा संगम कार्यक्रम के तहत संभागीय आईटीआई रीवा में 16 जुलाई को सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक रोजगार मेला आयोजित किया जायेगा। रोजगार मेले में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को विभिन्न कंपनियों में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 10 कंपनियों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों में युवक एवं युवतियों की आयु सीमा तथा शैक्षणिक योग्यता अलग-अलग निर्धारित की गई है। वेतन एवं भत्ते 8500 रुपए से 25 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। वेतन एवं भत्ता विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग देय होगा। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा।

शक में खुलवाया कार का फ्यूल टैंक पेट्रोल पंप पर 4 घंटे तक चली नाप-जोख

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के कनोडिया पेट्रोल पंप पर सोमवार रात उस समय हंगामे जैसे हालात बन गए जब एक ग्राहक ने डीजल की मात्रा को लेकर शक जाहिर करते हुए अपनी कार की टंकी ही खुलवा दी। फिर चार घंटे तक पंप पर ही बैठकर नाप-जोख कराता रहा। जमीन पर टंकी रखी गई और उसमें भरे करीब 65 लीटर डीजल को 10-10 लीटर के गैलनों में मापा गया। घटना रात की है, जब प्रिंस मिश्रा नाम के युवक ने डीजल भरवाने के बाद शक जाहिर किया। उन्होंने बताया कि, "मेरे वाहन की टंकी की क्षमता कंपनी के मुताबिक 50 लीटर है, जबकि पंपकर्मियों ने कुल 53.5 लीटर डीजल भर दिया। कार में पहले से भी लगभग 5-6 लीटर डीजल मौजूद था।" प्रिंस ने कहा कि उन्होंने शक होने पर मैकेनिक बुलवाकर कार की टंकी निकलवाई और जमीन पर रखवा दी।

करीब चार घंटे तक चले इस घटनाक्रम को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग इकट्ठा हो गए। बावजूद इसके, ग्राहक और पेट्रोल पंप प्रबंधन किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे। प्रिंस मिश्रा का कहना था, "मैं किसी को दोषी नहीं ठहरा रहा, लेकिन मुझे शुरुआत से ही कुछ गलत लगा। यह सब मैंने अपनी संतुष्टि के लिए किया।"

पेट्रोल पंप प्रबंधन का कहना है कि "हम किसी ग्राहक के साथ धोखाधड़ी नहीं करते। मशीनें जांची हुई होती हैं और तय मानकों के अनुसार ही डीजल डाला जाता है।" उन्होंने घटना को ग्राहक के वाहन की तकनीकी गड़बड़ी या सेंसर की समस्या से जोड़कर खारिज किया।

जानकारों के मुताबिक, कुछ गाड़ियों की टंकी में 'एक्स्ट्रा स्पेस' या रिजर्व जगह होती है, जिससे थोड़ी ज्यादा मात्रा डीजल भर जाना असामान्य नहीं है। हालांकि पंप पर मशीन की जांच और टंकी की क्षमता की तकनीकी पुष्टि के बिना कोई ठोस निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

छह वर्ष से कम आयु के बच्चों के शैक्षणिक संस्थानों का सुबह 9 बजे से पूर्व संचालन न करें - कलेक्टर

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर प्रतिभा पाल ने जिले में संचालित समस्त शासकीय व अशासकीय शैक्षणिक संस्थाओं, जहाँ 6 वर्ष से कम आयु के बच्चे अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, को सुबह 9 बजे से पूर्व संचालित न करने का आदेश दिया है। उन्होंने उक्त संस्थाओं का संचालन सुबह 9 बजे के उपरांत 4 घंटे की अवधि के लिए संचालित करने का आदेश जारी किया है। उल्लेखनीय है कि महिला एवं बाल विकास विभाग भोपाल द्वारा संचालित आंगनवाड़ी केन्द्रों में स्कूल पूर्व शिक्षा हेतु 3 वर्ष से 6 वर्ष आयु के बच्चों के लिए 4 घण्टे का समय सुबह 9 बजे से दोपहर एक बजे तक निर्धारण करने के साथ परिवर्तन के अधिकार कलेक्टर को सौंपे गए हैं। तदनुक्रम में कलेक्टर द्वारा उक्त आदेश जारी किया गया है।

ओडिशा में छात्रा की मौत पर रीवा में एबीवीपी का प्रदर्शन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा के कॉलेज चौराहे पर मंगलवार को विद्यार्थी परिषद ने ओडिशा के बालेश्वर में छात्रा की मौत के विरोध में प्रदर्शन किया। छात्रों ने नारेबाजी के साथ श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। विद्यार्थी परिषद् के जिला संयोजक पीएन पांडेय ने बताया कि बालेश्वर के फकीर मोहन कॉलेज की छात्रा सौम्याश्री बिशी ने 13 जुलाई को विभागाध्यक्ष द्वारा की गई प्रताड़ना से आहत होकर आत्मदाह कर लिया था। लंबे संघर्ष के बाद उनका निधन हो गया। छात्रा ने विभागाध्यक्ष पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगाया था और प्रशासन से मदद की गुहार लगाई थी। कार्रवाई न होने पर शनिवार को उन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया, जिसके बाद उन्हें एम्स भुवनेश्वर में भर्ती कराया गया था।

मृतका के पिता का आरोप है कि जांच समिति ने गलत रिपोर्ट देकर उनकी बेटी को आत्महत्या के लिए मजबूर किया। विभागाध्यक्ष द्वारा की गई असंवेदनशील टिप्पणियों के कारण छात्रा ने यह गंभीर कदम उठाया। इसके विरोध में रीवा में छात्रों ने नारेबाजी कर आरोपी पर कठोर कार्रवाई की मांग की।

पवित्र रिश्ते की अनूठी मिसाल, पति-पत्नी ने लिया देहदान का संकल्प

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। पंजाबी महिला मंडल के सहयोग और अमर ज्योति संस्थान की प्रेरणा से कृष्ण नगर निवासी वरिष्ठ समाजसेवी श्री संदीप सिंह अरोरा और उनकी पत्नी श्रीमती सपना अरोरा ने मरणोपरांत देहदान का संकल्प लेकर समाज के सामने मानवता की एक अनूठी मिसाल पेश की है। इस अवसर पर समाजसेविका श्रीमती नीता खन्ना और श्रीमती आरती सचदेवा ने भी नेत्रदान का संकल्प लिया।अमर ज्योति संस्थान के संयोजक श्री मनोहर डिगवानी ने कहा, "देहदान मानवता की सेवा के लिए श्रेष्ठ दान है। मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी इससे अध्ययन कर चिकित्सा क्षेत्र में योगदान देते हैं। आमतौर पर हजारों में एक या दो लोग ही देहदान करते हैं, जो समाज के लिए प्रेरणादायी है।"

श्री विनोद गेलानी ने बताया कि अमर ज्योति ने नेत्रदान के साथ-साथ देहदान की अलख जगाने का बीड़ा उठाया है। उनकी प्रेरणा से अब तक 50 लोगों ने देहदान का संकल्प लिया है, और यह 52वां संकल्प है। साथ ही, तीन देह मेडिकल कॉलेज को सौंपी जा चुकी हैं।संकल्प समारोह में सोनिया जोली, मनोहर डिगवानी, मनोज अरोरा, विनोद गेलानी, दीपक वाधवानी, संदीप चमड़िया, हीरालाल सोनी, दिलीप सोनी सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। समिति के मार्गदर्शक श्री योगेश ताम्रकार, डॉ. पुष्पराज सिंह, कमल पुरुस्वानी, मनमोहन माहेश्वरी, विभाष बनर्जी, नरेंद्र चंद्र गुप्ता, ललित खुराना, श्यामलाल गुप्ता, डॉ. प्रकाश सिंह, संजय वाधवानी, अनिल मोटवानी, आशीष मंघनानी, संदीप धूत, विपुल हांडा, प्रदीप अरोड़ा, अनिल शर्मा, नीलाम्बर झा, जेठानंद वाधवानी, होलाराम खिलवानी, दिनेश अग्रवाल, अनिल झुलवानी, बसंत शर्मा, मनीष टेकवानी, रूपेश वलेचा, दीपक गुप्ता, अशोक ताम्रकार, दीपक वाधवानी, निकी मनचंदानी, दीपक चुगवानी, मंजूषा शाह, नीतू अग्रवाल, सुधीर जैन, और संदीप चमड़िया ने अरोरा परिवार के इस पुनीत कार्य की सराहना की और साधुवाद प्रेषित किया।यह संकल्प न केवल मेडिकल शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज में देहदान और नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भी सहायक होगा।

‘ऐसे लोगों की जरूरत जो सरकार पर केस करें’

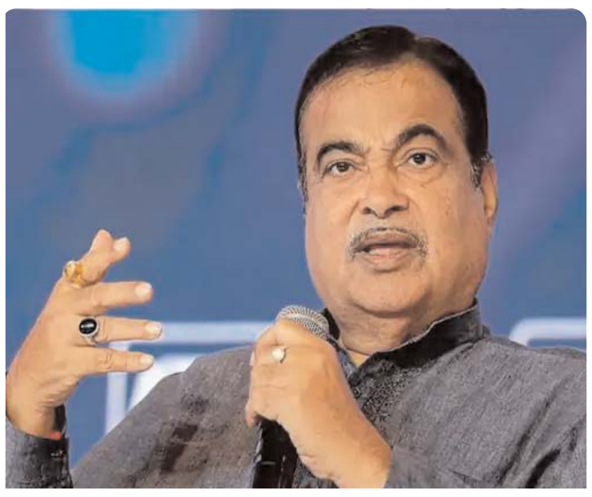

नागपुर ,एजेंसी। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने कहा, समाज में कुछ ऐसे लोग भी होने चाहिए, जो सरकार के खिलाफ केस दाखिल कर सकें। अगर सिस्टम में अनुशासन चाहिए तो सरकार के खिलाफ अदालत का सहारा लेना जरूरी है। उन्होंने कहा– कई बार अदालत का आदेश ऐसे काम भी करवा देते हैं, जो सरकार नहीं करवा पातीं। समाज में कुछ लोगों को सरकार के खिलाफ अदालत में याचिकाएं दाखिल करनी चाहिए। इससे नेताओं और सिस्टम में अनुशासन आता है।

गडकरी ने कहा कि ऐसा इसलिए क्योंकि जनता को लुभाने की राजनीति नेताओं–मंत्रियों के आड़े आती है और वे जनहित में कदम नहीं उठा पाते। गडकरी ने कई उदाहरण दिए, जिनमें केंद्र–राज्य सरकारों को खिलाफ याचिका दाखिल की गई थी।

उन्होंने कहा कि प्रशासन में अनुशासन बनाए रखने के लिए यह जरूरी चीज है।

दरअसल, 13 जुलाई को नितिन गडकरी नागपुर पहुंचे थे। वहां वहां प्रकाश देशपांडे स्मृति कुशल संगठक पुरस्कार समारोह में उन्होंने ये बात कही थी।समाज में जागरूक–जुझारू लोगों की मौजूदगी जरूरी गडकरी ने कुशल संघटक के तौर पर सम्मानित लोगों की सराहना की। उन्होंने कहा– इन लोगों ने सरकार के खिलाफ कई कानूनी लड़ाइयां लड़ीं। समाज में ऐसे जागरूक और जुझारू लोगों की मौजूदगी जरूरी है जो सिस्टम की गलतियों को उजागर करें और जनता के हित में कदम उठाएं।

केंद्रीय मंत्री ने कहा– ये लोग सिर्फ विरोध करने के लिए नहीं, बल्कि जनहित में काम कर रहे थे। इन लोगों ने अदालत के माध्यम से सरकार की जवाबदेही तय की और साबित किया कि लोकतंत्र में जागरूक नागरिकों की कितनी अहम भूमिका होती है। कई बार ऐसा हुआ कि जब लोग अदालत गए तो सरकार को अपने किसी फैसले से पीछे हटना पड़ा।

सरकार विद्यार्थियों के लिए सभी सुविधाएं देगी

भोपाल ,एजेंसी। जनजातीय कार्य मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने रविवार को खंडवा जिले के खालवा विकासखंड के ग्राम जामनी गुर्जर स्थित कन्या शिक्षा परिसर में छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि मन लगाकर पढ़ाई करें, सरकार सभी सुविधाएँ उपलब्ध करायेगी। उन्होंने छात्राओं के साथ बैठकर भोजन किया और उनकी समस्याएँ सुनी। मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि जिले के तीनों कन्या शिक्षा परिसरों में ब्लैक बोर्ड या ग्रीन बोर्ड के स्थान पर डिजिटल बोर्ड स्थापित कराए जाएंगे और कन्या शिक्षा परिसरों में स्मार्ट क्लास की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि छात्राओं को रोजगार मूलक प्रशिक्षण दिलाया जाएगा, जिससे वह पढ़ाई के बाद स्वयं का व्यवसाय स्थापित कर सकें और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकें। मंत्री डॉ. शाह ने कहा कि ग्राम आवलिया में संस्कृति व संस्कार का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कन्या शिक्षा परिसर के लिए बड़े वाहनों की व्यवस्था की जाएगी, जिससे छात्राओं को आसपास के दर्शनीय स्थल तथा उच्च शिक्षण संस्थानों का भ्रमण भी कराया जा सके। मंत्री डॉ. शाह ने बताया कि जनजातीय वर्ग की छात्राओं की सुविधाओं के लिए शालिनी ऐप तैयार किया गया है, जिसमें छात्रावासों में प्रवेश या छात्रवृत्ति भुगतान जैसी सभी समस्याओं के निराकरण की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उन्होंने कहा कि जिन विद्यार्थियों को छात्रावास में प्रवेश नहीं मिल पाता है, उन्हें गांव से शहर जाकर पढ़ने के लिए कमरा किराए पर लेने के लिए सरकार आर्थिक मदद दे रही है। मंत्री डॉ. शाह ने सहायक आयुक्त को निर्देश की छात्राओं को पॉलिटेक्निक कॉलेज और आईटीआई का भी भ्रमण कराया जाए।

गंभीर रूप से झुलसे मरीजों व जन्मजात विकृतियों वाले बच्चों के इलाज में मिली उल्लेखनीय सफलता

भोपाल ,एजेंसी। कल्पना कीजिए–एक झटका, एक हादसाज और आपका हाथ ऐसा हो जाए जैसे वह शरीर का हिस्सा ही नहीं! न हिल सके, न कुछ पकड़ सके। यह कोई फिल्मी कहानी नहीं, बल्कि ब्रैकियल प्लेक्सस इंजरी की हकीकत है। राहत की बात यह है कि इस गंभीर समस्या का इलाज न केवल संभव है, बल्कि सफल भी हो रहा है। शनिवार को एम्स भोपाल में इसी विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सीएमई (सतत चिकित्सा शिक्षा) का आयोजन किया गया। इसमें देशभर के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम की शुरुआत एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक डॉ. अजय सिंह, डीन (शैक्षणिक), और कार्यवाहक चिकित्सा अधीक्षक की मौजूदगी में हुई। कार्यक्रम में सर्जरी तकनीकों, मूल्यांकन विधियों, और पुनर्वास की रणनीतियों पर चर्चा हुई। विभागाध्यक्ष ने बताया कि विभाग ने गंभीर रूप से झुलसे मरीजों और जन्मजात विकृतियों वाले बच्चों के इलाज में उल्लेखनीय सफलता पाई है। उन्होंने अनुसंधान परियोजनाओं और भविष्य की योजनाओं की जानकारी भी दी। आयोजन सचिव ने कहा कि प्लास्टिक सर्जरी को केवल सुंदरता से जोड़कर नहीं देखना चाहिए। यह उन लोगों की जिंदगी संवारती है जो दुर्घटना, जलन, या विकृति के कारण सामाजिक जीवन से कट चुके होते हैं। यह इंजरी तब होती है जब कंधे और गर्दन के बीच से गुजरने वाली मोटी नसों (ब्रैकियल प्लेक्सस) को झटका या खिंचाव लगता है। यह खिंचाव इतना गंभीर होता है कि हाथ की शक्ति और संवेदना खत्म हो सकती है। ये नसें शरीर के ‘केबल कनेक्शन’ जैसी होती हैं–एक बार कट जाएं तो हाथ और दिमाग का संपर्क टूट जाता है।

पॉवर हाउस नंबर 2 ने एक दिन में ड्राई ऐश निष्पादन का नया कीर्तिमान रचा

भोपाल ,एजेंसी। मध्यप्रदेश पॉवर जनरेटिंग कंपनी के श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना दोंगलिया (खंडवा) के 660–660 मेगावाट क्षमता के पॉवर हाउस नंबर–2 ने गत दिवस कुल 140 बल्कर ट्रक ड्राई ऐश निजी कंपनियों को भेजकर निष्पादन का नया रिकार्ड कायम किया। यह पावर हाउस नंबर–2 की स्थापना के बाद ड्राई ऐश निष्पादन का सर्वश्रेष्ठ रिकार्ड है। उल्लेखनीय है कि पावर हाउस नंबर–2 की प्रथम यूनिट 18 नवम्बर 2018 को और द्वितीय यूनिट की कमीशनिंग 28 मार्च 2019 को हुई थी। उल्लेखनीय है कि पूर्व पॉवर हाउस नंबर–2 द्वारा 27 दिसंबर 2023 को अधिकतम 126 बल्कर ट्रक द्वारा ड्राई ऐश का निष्पादन किया गया था। श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना में पूर्व में ड्राई ऐश के निष्पादन में कई तकनीकी समस्या आ रही थीं। इस समस्या का ताप विद्युत परियोजना के अभियंताओं द्वारा अपनी सूझबूझ व तकनीकी कौशल से निराकरण कर नया कीर्तिमान रचा गया। इससे पूर्व श्री सिंगाजी ताप विद्युत परियोजना परियोजना के 600–600 मेगावाट क्षमता के पावर हाउस नंबर–1 ने इसी वर्ष 30 मार्च को अधिकतम 230 बल्कर ट्रक द्वारा ड्राई ऐश के निष्पादन का कीर्तिमान बनाया था।

कार्यपरिषद की बैठक में पहुंचा मामला?

भोपाल ,एजेंसी। राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीपीवी) के यूनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (यूआईटी) में विगत वर्षों से लगातार अनुशासनहीनता और आंतरिक विवाद की स्थिति बनी हुई है। इसके डिपार्टमेंट ऑफ कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग के विभाग के दो सहायक प्राध्यापक डॉ. मनीष अहिरवार और उदय चौरसिया पर विभिन्न आरोप लगे हैं, जिनमें संविदा प्राध्यापकों से टकराव, पुनर्नियुक्ति में पक्षपात, वॉक–इन इंटरव्यू में बाधा, छात्रों के मूल्यांकन में दुर्भावना, और शारीरिक झगड़े जैसी घटनाएं शामिल हैं। एक बार फिर कांट्रेक्ट फैकल्टी द्वारा रेगुलर फैकल्टी पर आरोप लगाए जा रहे हैं। अब यह मुद्दा गत दिवस हुई कार्य परिषद की बैठक में पहुंचा।

भारत और नेपाल के संबंध आत्मीयता से जुड़े हुए हैं

भोपाल ,एजेंसी। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्य मंत्री श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल ने कहा है कि भारत और नेपाल के बीच के संबंध केवल व्यापार तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आत्मीयता से जुड़े हुए हैं। राज्य मंत्री श्री पटेल भोपाल में आयोजित भारत–नेपाल आर्थिक सहयोग सम्मेलन 2025 को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार इन संबंधों को सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध है और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश को भारत–नेपाल आर्थिक साझेदारी का सेतु बनाने के लिये हरसंभव प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने नेपाल के प्रतिनिधिमंडल का स्वागत किया। भारत–नेपाल आर्थिक सहयोग सम्मेलन 2025 का आयोजन नेपाल दूतावास, भारत में स्थित पीएचडी चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के इंडिया–नेपाल सेंटर और मध्यप्रदेश राज्य चैप्टर के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। सम्मेलन में भारत और नेपाल के बीच द्विपक्षीय सहयोग को सुदृढ़ करना तथा निवेश, व्यापार, पर्यटन, शिक्षा, संस्कृति और विज्ञान जैसे क्षेत्रों में नई संभावनाओं में सहयोग के लिए विचार–विमर्श किया गया। सम्मेलन में नेपाल दूतावास की मंत्री–परामर्शदाता श्री अंबिका जोशी और आर्थिक परामर्शदाता श्री रवींद्र जंग थापा ने प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने बताया कि भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है, जहां नेपाल अपने कुल निर्यात का लगभग 68 प्रतिशत भारत को करता है। वित्त वर्ष 2023–24 में भारत से नेपाल को 7.041 बिलियन डॉलर का निर्यात और नेपाल से भारत को 829.71 मिलियन डॉलर का निर्यात हुआ। भारत की लगभग 150 कंपनियां वर्तमान में नेपाल में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि जनकपुर स्थित प्रसिद्ध जानकी मंदिर का निर्माण मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ की रानी द्वारा करवाया गया था, जो भारत–नेपाल के ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक है।सम्मेलन में पीएचडीसीसीआई मध्यप्रदेश चैप्टर के सह–अध्यक्ष डॉ. अनुपम चौकसे और श्री मनोज मोदी, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल के निदेशक डॉ. अमिताभ पांडे, एमएसएमई विभाग, मध्यप्रदेश सरकार के उप सचिव श्री पंकज शर्मा, एम्स भोपाल के निदेशक डॉ. अजय सिंह, यूनिसेफ भोपाल से श्री अनिल गुलाटी, मध्यप्रदेश पर्यटन बोर्ड में निवेश संवर्धन के निदेशक श्री राजेश गुप्ता, पतंजलि फूड्स एमपी एवं सीजी के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. राजेश सक्सेना, इंडिया–नेपाल सेंटर के सचिव श्री अतुल के ठाकुर, अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन एवं नीति संस्थान के वरिष्ठ सलाहकार डॉ. मनोज जैन और पीएचडीसीसीआई मध्यप्रदेश के रेजिडेंट मैनेजर श्री अनिरुद्ध दुबे सहित कई प्रमुख वक्ताओं और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की और विचार साझा किए।

वैश्विक टेक्सटाइल हब के रूप में मध्यप्रदेश को स्थापित करने की दिशा में अहम पहल

भोपाल,एजेंसी। दुबई दौरे के दूसरे दिन मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने टेक्सटाइल मर्चेंट्स ग्रुप के मुख्यालय का भ्रमण किया और दुबई के प्रमुख कपड़ा व्यापारियों से मुलाकात कर उद्योग एवं निवेश से जुड़े अनेक विषयों पर चर्चा की। इस उच्च स्तरीय संवाद का उद्देश्य भारत–यूएई समग्र आर्थिक साझेदारी समझौते (ष्टश्वक्क) के तहत कपड़ा क्षेत्र में व्यापार, नवाचार और निवेश के अवसरों को सशक्त बनाना है।

टेक्समास की स्थापना 1990 में दुबई चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के संरक्षण में हुई थी। यह दुबई के टेक्सटाइल री–एक्सपोर्ट हब के रूप में विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका है। चेयरमैन श्री नासिर अखून, वाइस चेयरमैन श्री विनोद नागदा, और अन्य भारतीय मूल के वरिष्ठ पदाधिकारियों की मौजूदगी में हुई बैठक में दोनों पक्षों ने ष्टश्वक्क के तहत द्विपक्षीय व्यापार को गति देने पर सहमति जताई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने टेक्समास के प्रतिनिधियों को बताया कि मध्यप्रदेश देश के प्रमुख वस्त्र उत्पादन राज्यों में से एक है। यहां पीएम मित्रा पार्क (धार) जैसे अत्याधुनिक टेक्सटाइल क्लस्टर वैश्विक निवेशकों के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने राज्य की नई औद्योगिक नीति 2025 के तहत भूमि, पूंजीगत अनुदान, स्त्रस्स्न्न प्रतिपूर्ति और श्रम सुविधा जैसे प्रावधानों से अवगत कराया। टेक्समास द्वारा अपनाए जा रहे ई–कॉमर्स, इन्वेंट्री और डिजिटल लॉजिस्टिक्स समाधानों की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मध्यप्रदेश में स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग और इंडस्ट्री 4.0 को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने इस क्षेत्र में तकनीकी सहयोग हेतु यूएई कंपनियों को आमंत्रित किया।

राजस्थान के शिव मंदिर में 151 किलो घी से अभिषेक, काशी विश्वनाथ के जलाभिषेक के लिए 1 सेकेंड का वक्त

नई दिल्ली ,एजेंसी। सावन महीने का आज पहला सोमवार है। सभी ज्योतिर्लिंगों के अलावा देश के छोटे–बड़े सभी शिव मंदिरों में जलाभिषेक जारी है। रविवार रात से ही मंदिरों के बाहर भक्तों की भीड़ जमा है।

मध्य प्रदेश के उज्जैन में महाकालेश्वर मंदिर के तड़के सुबह 2.30 बजे मंदिर के कपाट खोले गए। यहां हजारों श्रद्धालु बाबा महाकाल के दर्शन करने पहुंचे हैं। सावन महीने में यहां 80 लाख लोगों के आने का अनुमान है।

राजस्थान के जयपुर में चौड़ा रास्ता स्थित ताड़केश्वर महादेव मंदिर में सुबह 3 बजे भगवान भोलेनाथ का 151 किलो गाय के घी से अभिषेक किया गया है। महंत शक्ति व्यास ने बताया– 3100 किलो आम से मंदिर की सजावट की गई है।

यूपी के वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर में सुबह 4 बजे मंगला आरती हुई।

रात से ही दर्शन जारी हैं। मंदिर के बाहर कांवड़ियों की 3 किलोमीटर लंबी लाइन है। बाबा विश्वनाथ के जलाभिषेक के लिए केवल 1 सेकेंड का समय मिल रहा है।

ग्रामीणों को मिलेगी स्वास्थ्य सुविधाएं

भोपाल ,एजेंसी। सच्चे जनप्रतिनिधि वही होते हैं जो ज़रूरत के समय सिर्फ बातें नहीं बल्कि अपने अच्छे कार्यों से मिसाल पेश करते हैं। जबलपुर जिले के कुंडम विकासखंड के ग्राम पड़रिया में हाल ही में तैयार हुआ ‘आयुष्मान आरोग्य मंदिर’ इसका जीवंत उदाहरण है। यह कोई साधारण स्वास्थ्य केंद्र नहीं बल्कि स्थानीय विधायक श्री संतोष वरकड़े की दूरदर्शिता, संवेदनशीलता और अपने क्षेत्र के प्रति गहरे समर्पण का प्रतीक है।

फरवरी 2023 में जब पड़रिया गांव के लिए एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र की स्वीकृति मिली, तो पूरे क्षेत्र में उत्साह की लहर दौड़ गई। लेकिन भूमि उपलब्ध नहीं होने से कई महीनों तक स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण शुरू नहीं हो सका और परियोजना अधर में लटकी रही। क्षेत्रीय विधायक श्री वरकड़े ने स्वयं आगे आकर लगभग 30,000 वर्गफुट निजी भूमि दान में देकर एक ऐसी मिसाल पेश की जो वर्षों तक याद की जाएगी।उन्होंने यह भूमि नि:स्वार्थ भाव से केवल इस उद्देश्य से दी कि क्षेत्र की जनता को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं मिले। उनकी इस पहल से रूकी हुई परियोजना को नई गति मिली और परिणामस्वरूप ‘आयुष्मान आरोग्य मंदिर’ बनकर पूरी तरह तैयार है।

यह स्वास्थ्य केंद्र न केवल 10 बिस्तरों की सुविधा से युक्त है, बल्कि इसके परिसर में ही डॉक्टरों व स्टाफ के लिए आवासीय सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है, जिससे आपातकालीन परिस्थिति में भी स्वास्थ्य सेवाएं बाधित नहीं होंगी। आयुष्मान आरोग्य मंदिर के शुरू होने से 23 गांवों के लगभग 15 से 20 हजार लोग को सीधा लाभ प्राप्त होगा। ग्रामीणों को छोटी–बड़ी बीमारियों के लिए शहर भी नहीं जाना पड़ेगा। इससे न केवल इलाज सुलभ होगा, बल्कि ग्रामीणों का आर्थिक बोझ भी घटेगा।

वास्तव में यह स्वास्थ्य केंद्र सिर्फ एक इमारत नहीं है यह ग्रामीणों की उम्मीद, आत्मनिर्भरता और सम्मानजनक जीवन की दिशा में बढ़ाया गया सशक्त कदम है।

जीवनशैली सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण कदम

भोपाल ,एजेंसी। श्रम तथा पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल के निर्देशानुसार श्रम विभाग श्रमिकों की भलाई और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से श्री नाम से नई पहल की शुरुआत की गई है। इस पहल के अंतर्गत श्रमिकों के स्वास्थ्य, जागरूकता और जीवनशैली सुधार के लिए कई महत्वपूर्ण कदम प्रस्तावित किए गए हैं। श्री के तहत मुख्य रूप से नशा न करने की पहल, दैनिक व्यायाम का महत्व और मधुमेह जैसी बीमारियों से बचाव के लिए आहार नियंत्रण जैसे विषयों पर जागरूकता फैलाई जाएगी। इसके लिए कर्मचारी राज्य बीमा (ईएसआई) तंत्र के साथ संबल योजना, श्रम कल्याण योजनाएं एवं निर्माण श्रमिक कल्याण बोर्ड डेटाबेस का प्रभावी उपयोग किया जाएगा। इन विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म्स के माध्यम से राज्य में बड़ी संख्या में श्रमिकों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी पहुंचाई जाएगी। श्री पहल के अंतर्गत अब प्रत्येक मंगलवार को कर्मचारी राज्य बीमा सेवाएं के सभी औषधालयों और चिकित्सालयों में श्रमिकों के लिए स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे।

इस पहल के अंतर्गत कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा श्रमिकों को निवारक स्वास्थ्य संदेशों से अवगत भी कराया जा रहा है। इस पहल के तहत प्रदेश के कर्मचारी राज्य बीमा सेवाएं के 42 औषधालयों और 5 चिकित्सालयों में एक साथ स्वास्थ्य विषयों पर जागरूकता कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। भोपाल के सोनागिरी औषधालय, देवास अस्पताल, पीथमपुर औषधालय, मंडीदीप और अमलाई औषधालय में उच्च रक्तचाप और जीवनशैली में बदलाव पर चर्चा की गई। भोपाल केंद्र पर मुँह के कैंसर, मंदसौर और बुरहानपुर में मधुमेह, बिरलाग्राम नागदा में मधुमेह की बीमारी पर जानकारी दी गई।

लखनऊ और पाटलिपुत्र के लिए सीधी ट्रेन

भोपाल ,एजेंसी। भोपाल से पाटलिपुत्र और भोपाल– लखनऊ वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन के लिए अगस्त में रैक मिल सकते हैं। रैक आने के बाद 10 से 15 दिन के ट्रायल रन के बाद सितंबर के अंतिम या अक्टूबर के पहले हफ्ते यह ट्रेन शुरू की जा सकती है। सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया के मुताबिक प्रारंभिक तौर पर कोच के अलॉटमेंट कर दिए गए हैं। आगे की प्रक्रिया के लिए रेल मंत्रालय के आदेश का इंतजार है। भोपाल से पटना के लिए आमतौर पर साप्ताहिक छोड़कर अन्य कोई ट्रेन नियमित तौर पर नहीं चलती। इसी तरह भोपाल से लखनऊ के लिए चलने वाली भोपाल–लखनऊ– प्रतापगढ़ सप्ताह में तीन दिन ही है। इन दोनों ही स्थानों के लिए स्लीपर श्रेणी में 50 से 100 के बीच वेटिंग अक्सर रहती है। इसी तरह एसी 3 श्रेणी में भी वेटिंग के हालात बने रहते हैं। इन्हें देखते हुए रेल मंत्रालय ने करीब 3 साल पहले भोपाल से पाटलिपुत्र और लखनऊ के लिए वंदे भारत ट्रेन चलाने की घोषणा की थी। बताया जाता है कि सिटिंग श्रेणी की ट्रेन बेंगलुरू में बनाई जाती है। जबकि, स्लीपर श्रेणी की गाड़ी के कोच चेन्नई में बना रहे हैं।

ब्रायडन कार्स ने मारी रवींद्र जडेजा को टक्कर

नई दिल्ली ,एजेंसी। भारत और इंग्लैंड के बीच लॉर्ड्स में तीसरा टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मैच का आज आखिरी दिन चल रहा है। इसी बीच रविंद्र जडेजा और इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ब्रायडन कार्स के बीच मैदान पर टक्कर हो गई। जिसके बाद बात इतनी बढ़ गई कि दोंों के बीच बहस हो गई। बाद में इंग्लैंड कप्तान बेन स्टोक्स को बीच में आकर मामला शांत कराना पड़ा।

इंग्लैंड ने भारत को 193 रनों का लक्ष्य दिया था। जवाब में भारत की शुरुआत खराब रही और उसने जल्दी-जल्दी विकेट खो दिए। ये घटना 35वें ओवर की आखिरी गेंद के बाद हुई। जडेजा ने एक शॉट खेला और रन लेने के लिए दौड़े। उसी समय कार्स भी गेंद की तरफ देख रहे थे और दोनों आपस में टकरा गए। कार्स को गुस्सा आ गया क्योंकि उनका संतुलन बिगड़ गया था। जडेजा को भी चोट लग सकती थी। दोनों के बीच तीखी बहस हुई, जिसके बाद स्टोक्स ने बीच बचाव किया।

वहीं इस मामले का वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है। जिसमें जडेजा और कार्स के बीच बहस होती दिख रही है। दिन के पहले सेशन में इंग्लैंड ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने भारत के चार बल्लेबाजों को आउट कर दिया।

पंत को जोफ्रा आर्चर ने बोल्ड कर दिया और उन्हें

लंबे समय बाद जोफ्रा आर्चर ने वापसी की और कमाल कर गए

नई दिल्ली ,एजेंसी। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर ने साढ़े चार साल बाद टेस्ट में वापसी की और भारत के खिलाफ लॉर्ड्स टेस्ट में छा गए। उन्होंने लॉर्ड्स टेस्ट में भारत की हार में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने ऋषभ पंत का ऑफ स्टंप उड़ा दिया जो पहली पारी में उनके रन आउट के बाद मैच का दूसरा बड़ा टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। पंत को आउट करने के बाद आर्चर ने आक्रामक अंदाज में जश्न मनाया और उन्हें कुछ कहा भी। मैच के बाद उन्होंने बताया कि आखिर भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज से उन्होंने कहा क्या था। लंबे समय बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी करने वाले आर्चर ने लॉर्ड्स टेस्ट में भारत के खिलाफ मैच जिताऊ प्रदर्शन किया। दोनों पारियों को मिलाकर उन्होंने 5 विकेट झटके। लॉर्ड्स के इसी मैदान में ठीक 6 साल पहले आर्चर ने इंग्लैंड को पहली बार क्रिकेट वर्ल्ड कप जिताने में बड़ी भूमिका निभाई थी। लॉर्ड्स टेस्ट के आखिरी दिन भारत को जीत के लिए 135 रन और बनाने थे। 6 विकेट हाथ में थे।

टीम ने 4 विकेट पर 58 रन के स्कोर के साथ आखिरी दिन के खेल की शुरुआत की। लेकिन पहले 30-40 मिनट में ही पंत, केएल राहुल और वॉशिंगटन सुंदर आउट हो चुके थे। स्कोर हो गया था 82-7 और लक्ष्य था 193 रन का। मैच के आखिरी दिन जोफ्रा आर्चर की गेंदबाजी निर्णायक साबित हुई। पहले तो उन्होंने पंत को क्लीन बोल्ड किया फिर वॉशिंगटन सुंदर का अपनी ही गेंद पर जबरदस्त कैच पकड़कर विकेट लिया।

सुरक्षाकर्मियों का खाना खा गई पीसीबी?

नई दिल्ली ,एजेंसी। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) और विवादों से उसका नाता एक बार फिर सुर्खियों में है, जब एक नई रिपोर्ट में करोड़ों के भ्रष्टाचार का खुलासा हुआ है। हाल के वर्षों में पीसीबी और उसके प्रशासनिक निकाय में हुई उथल-पुथल के बीच, पाकिस्तान के महालेखा परीक्षक (एजी) ने वित्तीय अनियमितताओं की रिपोर्ट सामने आने के बाद शीर्ष निकाय के लिए और भी शर्मिंदगी खड़ी कर दी है। कथित भ्रष्टाचार की राशि करोड़ों में है, जो बोर्ड के भीतर वित्तीय अनियमितताओं को रेखांकित करता है।रिपोर्ट में अनियमितताओं में अंतरराष्ट्रीय मैचों के दौरान सुरक्षा प्रदान करने हेतु भोजन के लिए पुलिस को 63.39 मिलियन (पाकिस्तानी) रुपये का भुगतान और कराची के हाई परफॉर्मेंस सेंटर में अंडर-16 आयु वर्ग में तीन कोचों की अनधिकृत नियुक्ति शामिल है, जिनका कुल वेतन 5.4 मिलियन रुपये है। इसमें उचित प्रतिस्पर्धा के बिना टिकट अनुबंधों के आवंटन की भी बात कही गई है। न्यूज18 के मुताबिक रिपोर्ट में मैच अधिकारियों को 38 लाख रुपये की अतिरिक्त फीस और मीडिया निदेशक की 9 लाख रुपये प्रति माह की अनियमित नियुक्ति का भी उल्लेख है।

पीसीबी के 2023-24

ओलंपिक खेलों का शेड्यूल आया सामने, भारत के सभी मुकाबलों से जुड़ी तारीख और वेन्यू की पूरी जानकारी

नई दिल्ली,एजेंसी। तीन साल बाद लॉस एंजिलिस में होने वाले ओलंपिक 2028 का शेड्यूल सामने आ गया है। ओलंपिक 2028 का आगाज 14 जुलाई को होगा और इसका समापन 30 जुलाई को होगा। आधिकारिक तौर पर ओलंपिक 14 जुलाई से 30 जुलाई 2028 तक आयोजित होने हैं। लेकिन क्रिकेट इसके कुछ दिन पहले ही शुरू हो जाएगा। क्रिकेट के इवेंट 12 जुलाई से शुरू होकर 29 जुलाई तक खेले जाएंगे।

वहीं 2028 लॉस एंजिलिस ओलंपिक में भारत के इवेंट के शेड्यूल की बात करें जिसे मेडल जीतने की सबसे ज्यादा संभावना है तो क्रिकेट 12 से 29 जुलाई में खेला जाएगा। इसके बाद रेसलिंग, शूटिंग, एथलेटिक्स, हॉकी, बैडमिंटन की शुरुआत होगी। क्रिकेट (12- 29 जुलाई)- 1900 के बाद पहली बार ओलंपिक में वापसी करने वाले क्रिकेट में भारत के पास मेडल जीतने का सबसे बड़ा मौका है। 6 टीमों वाला ये टूर्नामेंट 12 से 20 जुलाई तक फेयरग्राउंड्स क्रिकेट स्टेडियम में महिला वर्ग में खेला जाएगा। पुरुष टीम अपना पहला मैच 22 जुलाई को खेलेगी। जबकि मेडल इवेंट्स मैच 29 जुलाई को होंगे। कुश्ती (24-30 जुलाई)- 2008 के ओलंपिक खेलों के बाद से कुश्ती ने भारत के ओलंपिक मेडल में सबसे ज्यादा योगदान दिया है। इसका आयोजन 24 से 30 जुलाई तक लॉस एंजिल्स कन्वेंशन सेंटर हॉल 2 में आयोजित होगा।

शूटिंग (15-25 जुलाई)- पेरिस ओलंपिक में भारत के 6 मेडल में से तीन शूटिंग में जीते थे। ये इवेंट पहले दिन से ही शुरू होकर लॉन्ग बीच टारगेट शूटिंग हॉल में 25 जुलाई तक चलेगी।

एथलेटिक्स (15-30 जुलाई)- लॉस एंजिलिस में एक बार फिर

नीरज गोल्ड के इरादे से उतरेंगे। टोक्यो ओलंपिक चैंपियन और पेरिस ओलंपिक के सिल्वर मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा के लिए दूसरा ओलंपिक गोल्ड जीतने का बेहतरीन मौका है। एथलेटिक्स इवेंट 15- 24 जुलाई तक कोलिजीयम में आयोजित होंगे।

हॉकी (12-29 जुलाई)- भारत ने ओलंपिक इतिहास में हॉकी में सबसे ज्यादा आठ गोल्ड मेडल जीते हैं। लॉस एंजलिस खेलों में हॉकी के इवेंट 12 से 29 जुलाई के बीच कार्सन फील्ड पर खेले जाएंगे।

बैडमिंटन (15-24 जुलाई)- गैलेन सेंटर में होने वाले इस आयोजन में भारत के कई बड़े नाम शामिल होंगे। बैडमिंटन में सायना नेहवाल, पीवी सिंधु भारत को मेडल दिला चुकी हैं।

वेटलिफ्टिंग (24-29 जुलाई)- वेटलिफ्टिंग के इवेंट पीकॉक थियेटर में 24 से 29 जुलाई के बीच होंगे। मीराबाई चानू ने टोक्यो ओलंपिक में इस इवेंट में सिल्वर मेडल जीता था।

बॉक्सिंग (15-30 जुलाई)- बॉक्सिंग के इवेंट 15 से 30 जुलाई के बीच होंगे। इस इवेंट में मेडल मैच 27 से 30 जुलाई के बीच खेले जाएंगे। वहीं आर्चरी के इवेंट 15 से 25 जुलाई, गोल्फ 19 से 29 जुलाई, जुडो 15 से 22 जुलाई, रोइंग 15 से 22 जुलाई, स्क्वॉश के 15 से 24 जुलाई, स्विमिंग के इवेंट 22 से 30 जुलाई, टेबल टेनिस 15 से 29 जुलाई, टेनिस के इवेंट 19 से 28 जुलाई के बीच आयोजित होंगे।

लॉस एंजिलिस ओलंपिक में इस दिन शुरू होगा क्रिकेट

नई दिल्ली। लॉस एंजिलिस में 2028 में होने वाले ओलंपिक में क्रिकेट की 128 साल बाद वापसी होगी। इस बहुप्रतीक्षित वापसी का फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। अब होने वाले मैचों की तारीख को लेकर जानकारी सामने आई है। दरअसल, क्रिकेट के मुकाबले लॉस एंजिल्स से लगभग 50 किलोमीटर दूर पोमेना शहर के फेयरग्राउंड्स स्टेडियम में 12 जुलाई, 2028 से खेले जाएंगे। इसके पदक मैच 20 और 29 जुलाई, 2028 को होंगे। प्रतियोगिता के कार्यक्रम के मुताबिक, अधिकतर दिन दो मैच खेले जाएंगे, जबकि 14 और 21 जुलाई को कोई मैच नहीं होगा। बता दें कि, पिछले साल अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने क्रिकेट, बेसबॉल, फ्लैग फुटबॉल, लैक्रोस और स्क्वॉश

को 2028 ओलंपिक खेलों में शामिल करने की मंजूरी दी थी।

पिछली बार क्रिकेट साल 1900 में पेरिस ओलंपिक का हिस्सा था। उस दौरान ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के बीच दो दिवसीय मुकाबला खेला गया था। अब इसे अनाधिकारिक टेस्ट के रूप में गिना जाता है।

हालांकि, लॉस एंजिलिस ओलंपिक में 6 टीमें टी20 फॉर्मेट में खेलती दिखेंगी। इतना ही नहीं आयोजकों ने एक टीम में अधिकतम खिलाड़ियों की संख्या भी तय की है। आयोजकों ने कहा है कि एक टीम में 15 खिलाड़ी होंगे।

पुरुष और महिला दोनों श्रेणियों में अधिकतम 90 खिलाड़ियों का कोट तय किया गया है। इसका मतलब है कि, अधिकतम 90 खिलाड़ी होंगे। पुरुष और महिला वर्ग में कुल 6-6 टीमें और 180 खिलाड़ी ओलंपिक में क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट टी20 में भाग लेंगे।

आईसीसी के फिलहाल 12 नियमित और 94 सहयोगी सदस्य हैं। नियमित सदस्यों में अफगानिस्तान, ऑस्ट्रेलिया, बांग्लादेश, इंग्लैंड, भारत , आयरलैंड, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, वेस्टइंडीज और जिम्बाब्वे की टीमें हैं। हालांकि, 2028 ओलंपिक के लिए क्वालिफिकेशन प्रक्रिया के बारे में अब तक कोई जानकारी नहीं है। इसमें अमेरिका का खेलना तय माना जा रहा है, क्योंकि उन्हें मेजबान कोटे का फायदा मिलेगा।

ऋषभ पंत की चोट पर कप्तान शुभमन गिल ने दिया अपडेट

नई दिल्ली ,एजेंसी। टीम इंडिया कप्तान शुभमन गिल ने उपकप्तान ऋषभ पंत की चोट पर अपडेट दिया है। ऋषभ पंत को लॉर्ड्स टेस्ट के पहले दिन विकेटकीपिंग करते समय चोट लग गई थी। जिस कारण वह विकेटकीपिंग नहीं कर पाए थे। पंत के विकेटकीपिंग नहीं कर पाने के कारण से ध्रुव जुरेल ने बाकी बचे मैच में विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी संभाली थी। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि, ऋषभ पंत को अंगुली में लगी चोट ज्यादा गंभीर नहीं है। शुभमन गिल ने बताया कि, ऋषभ स्कैन के लिए गए हैं। कोई बड़ी चोट नहीं है, इसलिए मैनचेस्टर में चौथे टेस्ट तक वह ठीक हो जाएंगे। चौथा टेस्ट मैच 23 से 27 जुलाई तक मैनेचेस्ट के ओल्ड ट्रैफर्ड मैदान पर खेला जाना है। लॉर्ड्स में इंग्लैंड की पहली पारी के दौरान जसप्रीत बुमराह की गेंद को पकड़ने की कोशिश करने के दौरान पंत के बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में चोट लग गई थी।

पंत ने तीसरे टेस्ट के पहले दिन दूसरे सत्र के दौरान पारी के 34वें ओवर से जसप्रीत बुमराह की लेग साइड में की गेंद को रोकने के लिए अपनी बाईं ओर से डाइव लगाई थी। इसके बाद वह दर्द से कराह रहे थे। ऋषभ पंत गेंद पर अपना हाथ रखने में कामयाब रहे, लेकिन इसे पूरी तरह से रोक नहीं पाए। इसके बाद खेल कुछ देर के लिए रुका रहा।

भारतीय सहयोगी स्टाफ ने पंत के हाथ का इलाज करवाया, लेकिन जब खेल दोबारा शुरू हुआ तो विकेटकीपर ने अपने हाथ उचका दिए। बुमराह का ओवर खत्म होने के बाद पंत मैदान से बाहर चले गए।

बाद में बीसीसीआई की ओर से कहा गया कि, पंत की बाईं तर्जनी अंगुली में चोट लग गई है। वह फिलहाल मेडिकल टीम की निगरानी में इलाज करा रहे हैं। ऋषभ पंत की अनुपस्थिति में ध्रुव जुरेल विकेटकीपिंग कर रहे हैं।

क्रिकेटर यश दयाल को बड़ी राहत, कोर्ट ने यौन शोषण मामले में गिरफ्तारी पर रोक लगाई

नई दिल्ली ,एजेंसी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के तेज गेंदबाज यश दयाल को मंगलवार को बड़ी राहत मिली जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने एक महिला का पांच साल तक कथित तौर पर शोषण करने के आरोप में दर्ज प्राथमिकी के संबंध में उनकी गिरफ्तारी पर रोक लगा दी। यश के खिलाफ 6 जुलाई को गाजियाबाद के इंदिरापुरम पुलिस स्टेशन में बीएनएस की धारा 69 के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई थी, जो धोखे से यौन संबंध बनाने से संबंधित है।

न्यायमूर्ति सिद्धार्थ वर्मा और न्यायमूर्ति अनिल कुमार की पीठ ने यश को अगली सुनवाई तक राहत प्रदान की। यश के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज होने के बाद, उन्होंने अपनी गिरफ्तारी पर रोक लगाने के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय का रुख किया। यश की गिरफ्तारी पर रोक लगाते हुए पीठ ने महिला से कहा, आपको एक दिन, दो दिन, तीन दिन तक बेवकूफ बनाया जा सकता था... लेकिन पाँच साल... आप पाँच साल के लिए रिश्ते में हैं... किसी को पाँच साल तक बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। यश पर शादी का झांसा देकर महिला का शोषण करने का आरोप है। शिकायतकर्ता के अनुसार, दोनों की मुलाकात लगभग पाँच साल पहले हुई थी और उसने उससे शादी का वादा किया था। महिला ने दावा किया है कि यश उसके शादी के प्रस्ताव को टालता रहा और बाद में उसे पता चला कि उसके अन्य महिलाओं के साथ भी संबंध हैं। यश की ओर से गोपाल स्वरूप चतुर्वेदी, गौरव त्रिपाठी और रघुवंश मिश्रा की सहायता से पेश हुए। आरसीबी के इस स्टार तेज गेंदबाज ने प्रयागराज पुलिस से भी शिकायत की और महिला के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की।

चेल्सी ने फीफा क्लब वर्ल्ड कप जीतकर रचा इतिहास, मिली इतनी प्राइज मनी

नई दिल्ली ,एजेंसी। कोल पाल्मर के बेहतरीन प्रदर्शन की बदौलत चेल्सी ने सोमवार को पेरिस सेंट-जर्मेन पर 3-0 की बेहतरीन शुरुआत के साथ फीफा क्लब वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर इतिहास रचा है। खिताब जीतने वाली टीम को ट्रॉफी के साथ करीब 125 मिलियन अमेरिकी डॉलर यानी 11 अरब भारतीय रुपये की इनामी राशि भी मिली, जो कि क्रिकेट वनडे वर्ल्ड कप से 6 गुना से भी ज्यादा है। चेल्सी के युवा खिलाड़ी कोल पाल्मर को गोल्डन बॉल से सम्मानित किया गया। ये अवॉर्ड टूर्नामेंट के बेस्ट खिलाड़ी को दिया जाता है।

मेटलाइफ स्टेडियम में हुए इस धमाकेदार फाइनल में पाल्मर ने शुरूआती हाफ में आठ मिनट के अंतराल में दो गोल किए मुकाबले के 22वें मिनट मॉलो गुस्टो की मदद

से पाल्मर ने पहला गोल दागा। बाद में 30वें मिनट पाल्मर ने एक बार फिर गोल करते हुए टीम की बढ़त दोगुना कर दिया।

जोआओ पेड्रो ने मुकाबले के 43वें मिनट गोल दागते हुए टीम की बढ़त को 3-0 कर दिया।

जोआओ पेड्रो के इस गोल ने चेल्सी की जीत को लगभग पक्का कर दिया था। पीएसजी की टीम इस पूरे मुकाबले में कोई गोल नहीं दाग सकी। चेल्सी ने 17 गोल के साथ टूर्नामेंट में टॉप स्कोरर रही।

बता दें कि, चेल्सी ने दूसरी बार क्लब ट्रॉफी अपने नाम की है। इससे पहले उसने साल 2021 में खिताब जीता था। पीएसजी की टीम इस खिताब को जीत नहीं सकी, लेकिन चैंपियंस लीग और फ्रेंच लीग कप डबल जीतना, उसके सीजन की बड़ी उपलब्धि रही है।

करोड़ों की मालकिन हैं भारतीय बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल

नई दिल्ली ,एजेंसी। भारत की बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल ने अपने करियर में कई बड़ी उपलब्धियां अपने नाम की हैं। जिससे उन्होंने पूरी दुनिया में काफी नाम कमाया है। साइना नेहवाल न सिर्फ कोर्ट पर, बल्कि कमाई और लाइफस्टाइल के मामले में भी चैंपियन हैं।

वह भारत की पहली महिला शटलर हैं जिन्होंने ओलंपिक में मेडल जीता और वर्ल्ड नंबर 1 रैंकिंग तक पहुंची। हालांकि, साइना नेहवाल की कुल संपत्ति के बारे में यहां पूरी जानकारी बता रहे हैं।

साइना नेहवाल 36 से 40 करोड़ रुपये की कुल संपत्ति के साथ देश की सबसे अमीर शटलर्स में गिनी जाती हैं। उनकी आमदमी टूर्नामेंट, ब्रांड एंडोर्समेंट और रॉयल्टी से आती है। लग्जरी घर और गाड़ियां भी उनकी नेटवर्थ का हिस्सा हैं। हरियाणा के हिसार में 17 मार्च 1990 में जन्मीं

साइना ने अपने बेहतरीन करियर और ब्रांड एंडोर्समेंट के जरिए संपत्ति अर्जित की है।

साइना की कमाई का साधन कई स्त्रोतों से आता है। उनकी कुल संपत्ति करीब पांच मिलियन यानी 36 से 40 करोड़ रुपये आंकी गई है। स्पोर्ट्कीड़ा आदि के अनुसार ये लगभग 3 मिलियन डॉलर यानी 22 से 24 करोड़ रुपये के बीच भी हो सकती है। लेकिन अधिकांश नवीनतम रिपोर्ट्स 5 मिलियन डॉलर की ओर इशारा करती हैं। खेल के प्रति साइना नेहवाल का जुनून, जीवनशैली और कमाई युवा खिलाड़ियों के प्रेरणा है।

साइना नेहवाल ने 2015 में हैदराबाद में 4.6 करोड़ रुपये का एक आलीशान घर खरीदा था। साथ ही उनके कलेक्शन में बेहतरीन कारें भी शामिल हैं। उनके गैराज में मिनी कूपर, बीएमडब्ल्यू, मर्सिडीज-बेंज और दिसंबर 2023 में मर्सिडीज-एएमजी जीएलई53 यानी 1.7 करोड़ रुपये शामिल हैं।

वहीं एक और रिपोर्ट के अनुसार, साइना नेहवाल की सालाना आमदनी करीब 4 से 5 करोड़ रुपये के आसपास है। जिस कारण उनकी मासिक लगभग 30 से 40 लाख रुपये है।

वहीं साइना नेहवाल लंबे समय से कई प्रतिष्ठित ब्रांड्स साथ हैं। इन ब्रांड्स में योनेक्स, बीपीसीएल, हर्बालाइफ, टॉप रैमन, वैसलीन, एडलवाइज, आईओबी, केलोग्स आदि शामिल हैं। साइना नेहवाल ने 2012 में रिति स्पोर्ट्स से 40 करोड़ रुपये बड़ा कॉन्ट्रैक्ट किया था।

नाला पार-कर स्कूल जा रहे बच्चे, हाईकोर्ट ने जताई चिंता

तालाब में डूबने से 4-बच्चों की मौत पर सवाल, सीजे बोले-राज्य सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में बच्चों की सुरक्षा को लेकर हाईकोर्ट ने चिंता जताई है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा की डिवीजन बेंच ने कहा कि हादसों के लिए भले ही सरकार सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं है। लेकिन, बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है। दरअसल, जांजगीर-चांपा जिले में तालाब में डूबने से 4 बच्चों की मौत और कांकेर जिले में बच्चों के नाला पार कर स्कूल जाने के मामले को जनहित याचिका मानकर सुनवाई शुरू की है। जिस पर मुख्य सचिव को 29 जुलाई तक शपथपत्र प्रस्तुत करने कहा है।

नहाने के दौरान डूबे बच्चे: हाईकोर्ट ने मीडिया में आई दो खबरों को जनहित याचिका माना है। जिसमें, पहली घटना जांजगीर-चांपा के भैंसतारा गांव की है। यहां 12 जुलाई को स्कूल से लौटने के बाद नहाने गए 4 बच्चे स्कूल बैग रखकर खेलने निकले थे, लेकिन गहरे घटोली डबरी तालाब में उतरने के बाद गहराई में समां गए। बाद में जब शव पानी के ऊपर आया, तो लोगों को इसकी जानकारी हुई। उन्होंने चारों बच्चों को बाहर निकाला।

कांकेर में कमर तक पानी पार कर स्कूल जाते हैं बच्चे: दूसरी घटना कांकेर जिले की है, जहां केसलपारा गांव के बच्चे कमर तक पानी में चलकर रोज स्कूल जाते हैं। गांव में सिर्फ प्राइमरी स्कूल है, मिडिल स्कूल के बच्चों को कनागांव जाना पड़ता है। बीच में एक गहरा और खतरनाक नाला है। बारिश में पानी का बहाव तेज होता है, ऐसे में बच्चों का स्कूल पहुंचना किसी जोखिम से कम नहीं। लोगों ने कई बार पुल निर्माण की मांग की, लेकिन जिम्मेदार केवल आश्वासन ही देते रहे हैं।

हाईकोर्ट बोला- राज्य सरकार की है बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी: इन दोनों मामलों की सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार भले ही सीधे इन घटनाओं के लिए जिम्मेदार न हो, लेकिन बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना सरकार की संवैधानिक जिम्मेदारी है। स्कूलों के आसपास मौजूद तालाब, पुलिया, और अन्य खतरनाक क्षेत्रों को चिन्हित कर तुरंत सुरक्षा उपाय किए जाएं।

मुख्य सचिव से मांगा व्यक्तिगत शपथपत्र: हाईकोर्ट ने मुख्य सचिव को अगली सुनवाई 29 जुलाई से पहले व्यक्तिगत शपथपत्र के साथ जवाब देने को कहा है। साथ ही उन्हें यह भी बताने कहा है कि राज्य सरकार ऐसे हालातों से निपटने में असफल क्यों है। कोर्ट ने इन दोनों खबरों के संदर्भ में की गई कार्रवाई की जानकारी भी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं।

अपर कलेक्टर ने आमजनों की सुनी समस्याएं, गंभीरतापूर्वक निराकरण के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशन में अपर कलेक्टर अनिल कुमार सिदार ने आज कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनदर्शन के माध्यम से आम नागरिकों की समस्याओं को सुना। जिले के ग्रामीण जन और नागरिकों ने जनदर्शन में अपनी छोटी-बड़ी समस्याओं को सीधे अपर कलेक्टर के समक्ष रखा। अपर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को प्राप्त सभी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ शीघ्रता से समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए हैं। आज की जनदर्शन में कुल 28 आवेदन प्राप्त हुए। इस जनदर्शन में आवेदक प्रदीप कुमार निवासी मनवारी पेट्रोल इंजन वाला पावर विडर दिलवाने के संबंध में, अनीशा बेगम निवासी मनेन्द्रगढ़ आवास योजना के तहत निर्मित मकान में पानी भरने के संबंध में, कविता निवासी सरोला योजनाओं का पैसा खाते में ना आने के संबंध में, अंकिता सिंह निवासी चिरमिरी चयन प्रक्रिया में धांधली के संबंध में, श्रीराम निवासी कछौड़ वन भूमि का पट्टा प्रदाय किए जाने के संबंध में, कौशिल्या निवासी उजियारपुर आवास पूर्ण में रोजगार गारंटी हाजिरी प्राप्त करने के संबंध में, बेलशिया निवासी सोनवर्षा आवास पूर्ण में रोजगार गारंटी हाजिरी प्राप्त करने के संबंध में, ममता कोल निवासी मनेन्द्रगढ़ नशा मुक्ति केन्द्र भेजने के संबंध में, इन्द्रपाल निवासी कछौड़ भूमि के संबंध में, राजकुमारी निवासी कछौड़ भूमि के संबंध में, अमित तिवारी निवासी मनेन्द्रगढ़ दो साल पूर्व दिए गए आवेदन पत्र पर कार्यवाही करने के संबंध में, अभिनव प्रसाद द्विवेदी सौर ऊर्जा के सर्वे कार्य में बिहान दीदियों को शामिल कर स्वावलंबी बनाने के संबंध में, नीरज सिंह निवासी मनेन्द्रगढ़ नेशनल हाईवे 43 पर अतिक्रमण के संबंध में, मो. सुफियान अहमद निवासी मनेन्द्रगढ़ शिक्षित बेरोजगार युवक के लिए दुकान आबंटन के संबंध में, पूरनचंद जायसवाल निवासी चिरमिरी नामांतरण करने के संबंध में, रैकुल अंसारी निवासी बेलबहरा राशि दिलवाने के संबंध में, मनीष सिंह निवासी खोंगापानी बीमारियों की रोकथाम हेतु दवाई छिड़काव एवं फॉगिंग कराने के संबंध में, मुख्य नगरपालिका अधिकारी तरुण एक्का का विगत 4 वर्षों से स्थानांतरण न होने के संबंध में, साफ-सफाई नहीं किए जाने पर शम्भू मिश्रा के विरुद्ध कार्रवाई के संबंध में, इमरान खान निवासी खड़गवां भूमि के संबंध में, मो. शाबिर निवासी खड़गवां भूमि के संबंध में, कन्हैया लाल निवासी कछौड़ भूमि के संबंध में, महाबीर सिंह निवासी चैनपुर भूमि के संबंध में, हृदय सिंह निवासी दर्रीटोला प्रमाण पत्र में हस्ताक्षर नहीं करने के संबंध में, गणेश निवासी कठौतिया अवैध कब्जे के संबंध में, राजेश घसिया निवासी चौघड़ा आवास की मांग के संबंध में, सुखमंती सिंह निवासी पोड़ी सड़क के संबंध में एवं सभी स्कूलों में एनसीईआरटी और छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम की किताबें अनिवार्य रूप से लागू कराने के संबंध में अपनी शिकायत लेकर उपस्थित हुए थे।

छत्तीसगढ़ से 30 बांग्लादेशी नागरिकों को वापस भेजा गया

रायपुर-दुर्ग-राजनांदगांव और रायगढ़ से घुसपैठियों को फ्लाइट से गुवाहटी ले गई पुलिस; बीएसएफ को सौंपेगी

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में पहली बार अवैध रूप से रह रहे 30 बांग्लादेशी नागरिकों को उनके देश वापस भेजा जा रहा है। केंद्र सरकार से डिपोर्ट की अनुमति मिलने के बाद राज्य सरकार और रायपुर पुलिस ने मंगलवार को 30 बांग्लादेशी नागरिकों को रायपुर एयरपोर्ट से फ्लाइट के जरिए गुवाहटी भेजा है। जानकारी के मुताबिक, घुसपैठियों को रायपुर पुलिस बीएसएफ के सौंपेगी, फिर असम से बांग्लादेश बॉर्डर पर बीएसएफ के जरिए डिपोर्ट प्रक्रिया पूरी की जाएगी। यह सारी प्रकिया आज ही पूरी होगी। उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा ने कहा कि, घुसपैठियों के संदर्भ में एक एसटीएफ (विशेष कार्य बल) का गठन किया गया है। एक हेल्पलाइन नंबर जारी किया गया है। जहां भी घुसपैठी मिलेंगे, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

रायपुर-दुर्ग, राजनांदगांव और रायगढ़ से पकड़े गए लोगों किया गया डिपोर्ट: इस डिपोर्ट प्रक्रिया में रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव और रायगढ़ जिलों से पकड़े गए बांग्लादेशी नागरिकों को गुवाहाटी ले जाया गया है। अधिकारियों ने बताया कि, यह छत्तीसगढ़ राज्य की पहली औपचारिक डिपोर्ट कार्रवाई है, जो केंद्र सरकार की मंजूरी से की जा रही है।

क्यों उठाया गया ये कदम: राज्य में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों की पहचान पिछले कुछ सालों में इंटेलिजेंस इनपुट और स्थानीय शिकायतों के आधार पर की गई थी। रायपुर समेत कई जिलों में ऐसे नागरिकों को पकड़ा गया था जो बिना वैध दस्तावेजों के भारत में रह रहे थे।

भारत-बांग्लादेश की बॉर्डर पर बीएसएफ तैनात: भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर बीएसएफ तैनात है। बॉर्डर की सुरक्षा की जिम्मेदारी उनकी है, इसलिए केंद्र सरकार ने उन्हें ही जिम्मेदारी दी है। साथ ही बांग्लादेश दूतावास से भी चर्चा चल रही है। उन्हें इस संबंध में जानकारी भी भेजी गई है।

जिन पर केस, उनको बाद में भेजा जाएगा: बताया जा रहा है कि जिनके खिलाफ केस दर्ज है। उन्हें मामले की सुनवाई पूरी होने तक यहीं रहना होगा। कोर्ट के फैसले के बाद ही उन्हें बांग्लादेश भेजा जाएगा। रायपुर में 6 बांग्लादेशियों के खिलाफ केस दर्ज है। इसमें तीन भाई, एक दंपती और उसकी नाबालिग बेटी शामिल हैं। दुर्ग में भी 7 से ज्यादा लोगों पर केस दर्ज है। राजनांदगांव में चोरी के मामले में बांग्लादेशी बंद है, जबकि रायपुर में 10 बांग्लादेशियों पर केस दर्ज नहीं किया है। उन्हें प्रतिबंधात्मक कार्रवाई करते हुए जेल में रखा गया है।

50 फीट गहरे राख के गड्ढे से मिला अज्ञात शव

क्राइम की 3 घटनाएं; बदमाशों ने होटल संचालक को मारा, 15 जुआरी पकड़ाए

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। जिले में मारपीट, हादसा और जुआ खेलने के 3 अलग-अलग मामले सामने आए है। पहला मामला सिविल लाइन थाना क्षेत्र का है जहां रिसदी लालघाट डेंगुरनाला के पास राख में लिपटा एक अज्ञात शव मिला है जिसमें पुलिस ने पानी भरे गड्ढे में गिरने से युवक के मौत की आशंका जताई है। दूसरे मामले में हरदीबाजार बस स्टैंड स्थित साईं भोजनालय में 2 युवकों ने भोजनालय के विकलांग संचालक अशोक कुमार जायसवाल (70 साल) को बर्तन से मारा। दोनों ने मुर्गी रोटी ऑर्डर किया था लेकिन बिलिंग से कम पैसा दे रहे थे, विरोध करने पर मारपीट की। वहीं, तीसरे मामले में कटघोरा थाना पुलिस ने जुआ खेलते 15 लोगों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से एक लाख रुपए से अधिक नकद, 17 बाइक और एक कार जब्त की है। सभी जुआरी पहाड़ के ऊपर टेंट लगाकर जुआ खेल रहे थे।

पहला मामला, राख में मिली लाश: रिसदी लालघाट में स्थानीय निवासियों को नाले से लगभग 100 मीटर दूर स्थित एक गड्ढे से तेज दुर्गंध आने की शिकायत मिली। जांच करने पर उन्हें राख में लिपटा एक शव मिला। स्थानीय लोगों ने तुरंत 112 पर सूचना दी। 15 जुलाई की सुबह थाना प्रभारी प्रमोद डनसेना के नेतृत्व में पुलिस टीम ने जिला प्रशासन और नगर सेना रेस्क्यू टीम की मदद से शव को बाहर निकाला। पुलिस अभी तक मृतक की पहचान नहीं कर पाई है। पहचान के लिए स्थानीय लोगों से पूछताछ की जा रही है। शव की तस्वीरें व्हाट्सएप ग्रुप में साझा की गई हैं। 15 ब्लॉक से एक व्यक्ति के लापता होने की सूचना मिलने पर उसके परिजनों को भी मौके पर बुलाया गया है। स्थानीय लोगों के अनुसार, इस क्षेत्र में संयंत्र से निकलने वाली राख को नदी-नालों और जंगल के किनारे डाला जाता है। इससे गर्मी और आंधी-तूफान के मौसम में लोगों को परेशानी होती है। वार्ड पार्षद और स्थानीय निवासियों ने इस समस्या की शिकायत कई बार संबंधित विभाग से की है।

दूसरा मामला, भोजनालय संचालक को मारा: कोरबा के हरदीबाजार बस स्टैंड स्थित साईं भोजनालय में उतरदा रेलबडरी के संजय कश्यप और नेवसा ओझापारा के राजेंद्र पोर्ते ने होटल में मुर्गा रोटी का ऑर्डर दिया। 60 रुपए प्रति प्लेट के हिसाब से दोनों को कुल 120 रुपएदेने थे। भोजन के बाद दोनों ने 50-50 रुपए देने की बात कही। जब होटल संचालक ने कम पैसे देने पर सहमति जता दी और दूसरे ग्राहक की सेवा में लग गए, तभी एक युवक ने पीछे से चम्मच से उनके सिर पर वार कर दिया। अशोक की पत्नी कृष्णा जायसवाल ने बीच-बचाव की कोशिश की।शोर सुनकर आस-पास के लोग मौके पर पहुंचे। दोनों आरोपी थाने में रिपोर्ट करने पर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकले। स्थानीय लोगों ने एक आरोपी को कॉलेज चौक के पास से पकड़ लिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर दोनों आरोपियों के खिलाफ बीएनएस 2023 के तहत कार्रवाई शुरू कर दी है। दूसरे आरोपी की तलाश जारी है।

तीसरा मामला, जुआरी पकड़ाए: कोरबा के कटघोरा थाना क्षेत्र में जुआरी पहाड़ के ऊपर टेंट लगाकर जुआ खेल रहे थे। इन जुआरियों में कटघोरा के अलावा पाली, कोरबा, रतनपुर और बिलासपुर से आए लोग शामिल थे।जुआरी अपने साथ शराब, पानी पाउच और नाश्ता लेकर आते थे। हर जुआरी लगभग 6 से 7 हजार रुपए लेकर खेल रहा था। पहाड़ की ऊंचाई और जंगली जानवरों के खतरे के बावजूद यहां लंबे समय से जुए का अवैध धंधा चल रहा था।

बैरिकेडिंग तोड़ मंत्री-बंगला घेरने पहुंचे एनएसयूआई कार्यकर्ता

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। पंडित जवाहरलाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के छात्रों को हॉस्टल की मूलभूत सुविधाओं की कमी के चलते लगातार परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इस मुद्दे को लेकर नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया ने छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के निवास का घेराव किया। 15 जुलाई को प्रदर्शन के दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल की मौजूदगी रही। कार्यकर्ताओं ने मंत्री के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और बैरिकेडिंग हटाकर मंत्री बंगले तक पहुंचने की कोशिश की। प्रदर्शनकारियों ने हॉस्टल में मूलभूत सुविधा उपलब्ध कराने की मांग की है।

पीने का साफ पानी नहीं: छात्रों ने आरोप लगाया है कि हॉस्टल में पीने का साफ पानी, शौचालय, बिजली, सुरक्षा और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं हैं। कई बार शिकायतें करने के बावजूद कॉलेज प्रशासन द्वारा सिर्फ आश्वासन दिए गए, लेकिन जमीनी स्तर पर कोई सुधार नहीं हुआ।

एनएसयूआई ने कहा - छात्रों के सब्र का बांध टूट चुका है: एनएसयूआई ने स्पष्ट किया कि छात्रों की समस्याओं को अनदेखा करना अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्री के निवास का शांतिपूर्ण घेराव कर सरकार का ध्यान खींचने की कोशिश की गई है ताकि छात्रों की आवाज को अनसुना न किया जाए। हम सिर्फ छात्रों के हक के लिए खड़े हैं।

अज्ञात वाहन ने मवेशियों को कुचला, 17 मौतें

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। सोमवार की देर रात तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने 20 से ज्यादा मवेशियों को कुचल दिया। जिससे 17 गौवंशों की मौके पर मौत हो गई। जबकि, 5 मवेशी घायल है। गौ-सेवकों ने मामले की शिकायत पुलिस से की है। घटना रतनपुर थाना क्षेत्र की है। इससे पहले, हाईकोर्ट ने सड़कों पर घूम रहे मवेशियों को हटाने के लिए राज्य शासन को आदेश जारी किया है। बावजूद इसके सड़कों पर मवेशियों का जमावड़ा लगा रहता है। जिसकी वजह से लगातार हादसे हो रहे हैं। रात के अंधेरे में मवेशियों के नजर नहीं आने पर बाइक सवार हादसों का शिकार हो रहे हैं। दरअसल, रतनपुर से पेंड्रा जाने वाले मार्ग पर बारीडीह के पास सड़क पर गाय, बैल और बछड़ों के झूंड बैठे थे। इसी दौरान रतनपुर की तरफ से आ रहे तेज रफ्तार वाहन ने गौवंशों को चपेट में ले लिया। हादसे के बाद ड्राइवर वाहन लेकर भाग निकला।

गौ सेवकों ने जताया विरोध, थाने में की शिकायत: मंगलवार की सुबह इस घटना की जानकारी लोगों को हुई। उन्होंने इसकी सूचना गौ-सेवकों को दी। जिसके बाद आक्रोशित गौ सेवक मौके पर पहुंच गए। उन्होंने घायल गौवंशों को इलाज के लिए भेजा। जिसके बाद मामले की शिकायत रतनपुर थाने में की। गौसेवकों ने दोषी के खिलाफ कठोर कार्रवाई की मांग की है। तनपुर के साथ ही सिरगिट्टी थाना क्षेत्र के सिलपहरी नेशनल हाईवे पर सड़क किनारे बैठे मवेशियों को ट्रक ने कुचल दिया था। सिरगिट्टी चकरभाठा के बीच नेशनल हाईवे पर ट्रक के ड्राइवर ने सड़क किनारे में बैठे मवेशियों को कुचल दिया था। हादसे में 16 मवेशियों की मौत हो गई थी। मस्तूरी-सीपत मार्ग पर सड़क किनारे बैठे मवेशियों को ट्रक ने कुचल दिया था। जिससे बड़ी संख्या में मवेशियों की मौत हुई थी।

हादसे में हो रही लोगों की मौतें: इधर, सड़कों पर बैठे मवेशियों के चलते लगातार हादसे भी हो रहे हैं। इससे बाइक चालकों की जानें जा रही हैं। पिछले दिनों रतनपुर नेशनल हाईवे पर भैंस से टकराने से बाइक सवार युवक की मौत हो गई थी। वहीं, उसके पीछे बैठा युवक घायल हो गया। रात में सड़कों पर बैठे मवेशी अंधेरे में नजर नहीं आते, जिससे हादसा होने का खतरा बना रहता है।

हाईकोर्ट का आदेश भी बेअसर: तखतपुर-मुंगेली, कोटा रोड, मस्तूरी, चकरभाठा के साथ ही सीपत रोड़ में शाम ढलते ही सड़कों पर मवेशियों का जमावड़ा रहता है। लगातार हो रहे हादसों पर हाईकोर्ट ने जनहित याचिका मानकर सुनवाई शुरू की है। इस दौरान समय-समय पर राज्य सरकार और जिला प्रशासन को आदेश जारी किया गया है। जिसमें उन्हें सड़कों से मवेशियों को हटाने और निगरानी करने कहा था। लेकिन, हाईकोर्ट के आदेश के बावजूद जिला प्रशासन मवेशियों को हटाने ध्यान नहीं दे रहा। ऐसे ही शहर के प्रमुख मार्ग और मोहल्ले-गलियों की सड़कों पर मवेशी घूमते रहते हैं। जिस कारण लोग हादसे का शिकार हो रहे हैं। इसके बाद भी सड़क पर घूमने वाले मवेशियों को नहीं हटाया जा रहा है।

एसएसपी बोले- मवेशी मालिक और चालक पर होगी कार्रवाई: एसएसपी रजनेश सिंह का कहना है कि, इस तरह से मवेशियों को सड़क पर छोड़ना मवेशी मालिकों की लापरवाही है। प्रशासन की तरफ से उन्हें मवेशियों को सुरक्षित रखने की हिदायत दी गई है।

एंबुलेंस ड्राइवरों की हड़ताल, केंद्रीय अस्पताल परिसर में खड़ी की गाड़ियां, सैलरी बढ़ाने की मांग

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। एसईसीएल हसदेव क्षेत्र के सभी एंबुलेंस ड्राइवर हड़ताल पर हैं। उन्होंने केंद्रीय अस्पताल परिसर गाड़ी खड़ी कर चाबी अधिकारी को सौंप दिया है। ड्राइवरों का कहना है कि 3 महीने से पेमेंट नहीं दिया गया है। हर महीने 8 हजार रुपए सैलरी मिलता है। जो कि बहुत कम है। जिससे परिवार का गुजारा नहीं हो पाता। उनकी मांग है कि बकाया रकम फौरन दिया जाए और वेतन बढ़ाया जाए।

ड्राइवरों की मांगों को लेकर चल रही बैठक: हालांकि, इन मांगों को लेकर अस्पताल के सीएमएचओ चेंबर में ड्राइवरों के प्रतिनिधियों के साथ अधिकारियों की बैठक चल रही है। ड्राइवरों के हड़ताल से राजनगर, पौराधार, बेहराबांध, कपिलधारा बिजुरी, लेदरी और सीएचएमओ जैसे क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधा प्रभावित है।

खड़ी ट्रक से टकराई बाइक, युवक घायल

मीडिया ऑडीटर, कांकेर (एजेंसी)। जिले के चारामा में एक बाइक खड़ी ट्रक से टकरा गई। नेशनल हाईवे-30 पर ये घटना 14 जुलाई को हुई। ग्राम सलना के रहने वाले साधुराम केशकाल जा रहे थे। तभी अंधेरे में उनकी बाइक खड़े ट्रक से टकरा गई। घटना चारामा थाना क्षेत्र की है। टक्कर के बाद उन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चारामा में भर्ती कराया गया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि एनएच-30 पर ढाबों के पास अक्सर ट्रक ड्राइवर भोजन या आराम के लिए अपने वाहन खड़े कर देते हैं, अंधेरे में खतरा बड़ जाता है।

नियमित रूप से खड़े करते है गाड़ी: सड़क की ढलान को घटना का एक प्रमुख कारण माना जा रहा है। इस स्थान पर पहले भी कई दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। पुलिस नियमित रूप से हाईवे किनारे खड़े वाहनों पर कार्रवाई करती है और जवानों की तैनाती भी की जाती है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है।

लेडी ब्रांच पोस्टमास्टर का फंदे से लटका मिला शव, लेस्लीगंज में ड्यूटी पर थी तैनात

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। लेस्लीगंज में तैनात ब्रांच पोस्टमास्टर का उनके किराए के मकान में फंदे से लटका शव मिला। मंगलवार को लाश सबसे पहले मकान मालिक की बेटी ने देखी और इसकी सूचना अपने परिजनों को दी। इसके बाद घटना की जानकारी मृतका के फैमिली को दी गई।

मृतका की पहचान मधु कुमारी (20) के रूप में की गई। वो बिलासपुर (छत्तीसगढ़) की रहने वाली थी। मधु दारूडीह पंचायत भवन स्थित पोस्ट ऑफिस में कार्यरत थी। मकान मालिक की बेटी नीलम बाला घर में थी और उसने मधु को आवाज लगाई और कोई जवाब नहीं मिला, तो दरवाजा खोलकर देखा।

पुलिस ने घटना को संदिग्ध बताया: कमरे के अंदर मधु का शव फांसी के फंदे पर लटका मिला। नीलम ने तुरंत अपने भाई अमित को सूचित किया, जिसने स्थानीय लोगों और पुलिस को खबर दी। लेस्लीगंज थाने के एसआई राजू मांझी ने मौके पर पहुंचकर जांच की। पुलिस ने घटना को संदिग्ध बताया है। मधु के परिजनों को सूचित कर दिया गया है। परिजनों की मांग पर शव को उनके आने तक फंदे से नहीं उतारा जाएगा।

हत्या या आत्महत्या, दोनों बिंदुओं पर जांच शुरू: मधु पिछले आठ महीने से इस मकान में किराए पर रह रही थी। वह अपने काम के प्रति ईमानदार थी। यह हत्या है या आत्महत्या, पुलिस दोनों बिंदुओं पर जांच कर रही है। थाना प्रभारी उत्तम कुमार राय ने बताया कि परिजनों के आने के बाद शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा जाएगा।

मनेन्द्रगढ़ में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना अंतर्गत द्वितीय कैरियर काउंसलिंग सत्र का हुआ आयोजन

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। भारत सरकार की ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' योजना के अंतर्गत आज विश्व युवा कौशल दिवस के अवसर पर रामटेक चंद्र जैन शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, मनेन्द्रगढ़ में बालिकाओं के लिए एक विशेष कैरियर काउंसलिंग का द्वितीय सत्र का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कलेक्टर एवं जिला दंडाधिकारी डी. राहुल वेंकट के आदेशानुसार एवं जिला कार्यक्रम अधिकारी आर.के. खाती के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। आयोजन महिला सशक्तिकरण (हब) मिशन शक्ति, महिला एवं बाल विकास विभाग के अंतर्गत जिला मिशन समन्वयक तारा कुशवाहा के नेतृत्व में किया गया। कार्यक्रम में विद्यालय की 10वीं एवं 12वीं की छात्राओं सहित समस्त शैक्षणिक स्टाफ ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इस काउंसलिंग सत्र का उद्देश्य बालिकाओं को स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित करना, उन्हें उचित समय पर कैरियर संबंधी जानकारी देना और उनके उज्जवल भविष्य हेतु सही मार्गदर्शन उपलब्ध कराना था। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित छात्राओं को न केवल विभिन्न कैरियर विकल्पों के बारे में परामर्श दिया गया, बल्कि उन्हें केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही बालिकाओं से संबंधित समस्त योजनाओं की विस्तृत जानकारी भी दी गई, जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर वे उपयुक्त सहायता केंद्रों से लाभ प्राप्त कर सकें। इस अवसर पर आर.के. खाती, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग एमसीबी, तारा कुशवाहा, जिला मिशन समन्वयक, उदय मिश्रा, प्राचार्य शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शैलजा गुप्ता, जेंडर विशेषज्ञ, मिशन शक्ति और अनीता कुमारी साह, वित्तीय साक्षरता समन्वयक, मिशन शक्ति सहित विद्यालय के समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने बालिकाओं के सशक्तिकरण हेतु महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। इस कार्यक्रम ने छात्राओं के भीतर आत्मविश्वास, जागरूकता और भविष्य निर्माण की प्रेरणा को मजबूती दी।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक / प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा विप्र एक्सप्रे प्रेस सीपत रोड सरकंडा बिलासपुर छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय वार्ड 14 हल्दीबाड़ी एमसीबी छत्तीसगढ़ से प्रकाशित, संपादक-संदीप द्विवेदी
आर .एन .आई नं . सी टी एच आई एन /25/ए 1478 फोन नं .7974467831,9589645803,mediaauditor1@gmail .com पीआइबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार , सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा